



Machhli Ke Ajaalbat (Gujarati)

મછલી કે અજાલબાત

શીખે તરીકત, અમીરે અહલે સુબત, બાનિયે ઘ'વતે ઉસ્તામી, હાજરત અલવામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્વાસ અતાર કાદિરી ૨-મવી

داعية محمد كريم
العسائرية

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી દામત્ બ્રકાતુહુમ્માલિહી
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ
લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ અઝ્જલ્ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર
અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઓર બુઝુર્ગી વાલે ! (دارالفکر بیروت) (المستطرف ج ۱ ص ۱)
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મસ્જિદત
13 શબ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



મહલી કે અજાઈબાત

યેહ રિસાલા (મહલી કે અજાઈબાત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત
અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ
દામત્ બ્રકાતુહુમ્માલિહી ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ
ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા
હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો
(બ ઝરીઅએ મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાખિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,
તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मछली के अजाँबात

(दिलयस्य सुवालात व जवाबात)

शैतान लाभ सुस्ती दिलाअे येह रिसाला (55 सफ़हात)
मुकम्मल पढ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मसाएल के साथ साथ
दिलयस्य मा'लूमात का ज़मीरा हाथ आअेगा.

दुःख शरीफ़ की इज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजर्रसम, रसूले अकरम, शह-शाहे बनी
आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : जिस ने येह
कहा : **“اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَنْزِلْهُ الْمُقْعَدَ الْمُقْرَبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ”** :¹
मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गइ.

(معجم كبير ج ٥ ص ٢٥ حديث ٤٤٨٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

यन्द् अनोपी मछलियां

सुवाल : समुन्दर अजाँबात से लरा पडा है और मछलियों में भी
कुदरत के अेक से अेक करिशमे हैं, यन्द् मछलियों के नाम ब
नाम कुछ हालात बयान कर दीजिये.

जवाब : यन्द् मछलियों का तज़क़िरा हाज़िर है :

¹ : अै अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हाज़रते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर रहमत नाज़िल इरमा और इन्हें क़ियामत के रोज़ अपनी बारगाह में मुकर्रब मकाम अता इरमा.

करमाने मुस्तक : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दूरे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमों बेजता है. (स्म)

रम्भादा (बर्क मछली)

रम्भादा (बर्क मछली) यूं तो यह एक छोटी मछली है मगर इस की आसिखत यह है के जब जल में ईंस जाती है तो जल जिस के हाथ में हो उस का हाथ कांपने लगता है ! तजरिबा कार शिकारी जब इस मछली को ईंसा हुवा पाता है तो उस की रस्सी किसी चीज से बांध देता है, जब तक वोड मर नहीं जाती रस्सी नहीं भोलता इस लिये के मरने के आ'द उस की यह आसिखत अत्म हो जाती है.

(حَيَاةُ الْحَيَوَانَ لِلْمَبْرُورِيِّ ج ٢ ص ٤٠)

कलिमा लिपी दुर्घ मछली

अबदुर्रहमान बिन हाइन मगरिबी ने बयान किया है के मैं एक मर्तबा “बुहैरअे मगरिब” में किश्ती पर सुवार हुवा, हमारे साथ एक लडका था उस के पास मछली पकडने की डोर और कांटा था. जब हमारी किश्ती मौजअे भरतून में पड़ोयी तो उस लडके ने अपनी डोर दरिया में ईंकी, एक बादिशत त्तर मछली कांटे में ईंसी लडके ने जब उसे निकाला तो यह देष कर हमारा ईमान ताजा हो गया के उस मछली के सीधे कान के पीछे اللهُ اللهُ और डोपर की जानिब مُحَمَّد और उस के उलटे कान के पीछे اللهُ اللهُ लिखा हुवा था. (ايضاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

काई देर तक फिन्दा रहने वाली मछलियां

अबू हाभिद अन-दलुसी की किताब “तोडूतुल अल्लाब” में लिखा है के बुहैरअे इम में एक ऐसी मछली पाई जाती है जो हाथ त्तर की (या'नी तकरीबन आध गज लम्बी) होती है उसे पकडा जाअे तो वोड

﴿رَبَّنَا ارْحَمْهُمَا كَمَا ارْحَمْتَ الَّذِينَ فِي الْأَرْضِ﴾ : श्री शम्भू मुझ पर दुःख दे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (प्रार्थना)

मरती नहीं बल्के झुट्कती रहती है और अगर उस का कोई टुकड़ा काट कर आग पर रखा जाये तो वोह टुकड़ा अेक दम उछल कर आग से बाहर आ जाता है और बसा अवकात आदमी के मुंह पर आ पडता है जब इस मछली को पकाना हो तो पतीली के ढक्कन पर लोहा या वज्रनी पथर रख दिया जाये ताके उस के टुकडे उछल कर पतीली में से बाहर न निकल पडे, जब तक वोह मुकम्मल तौर पर पक नहीं जाती मरती नहीं प्वाह उस के हजार टुकडे ही क्यूं न कर दिये जायें.

(حَيَاة الْخَيَوَان لِلْمِيسِرِيِّ ج ٢ ص ٤١)

गिन्दा जमीरा !

मन्कूल है : जब सिकन्दर बादशाह की झौंज हिन्दूस्तान से बहरी जहाज में रवाना हुई तो शाम के वक्त समुन्दर में अेक जमीरा (या'नी भुशुकी का टुकड़ा जिस के यारों तरफ़ पानी हो, टापू) नजर आया, जहाज लंगर अन्दाज हुवा और लश्कर उस जमीरे पर उतर पडा. भूँटे वगैरा गाडने तक तो भैर रही मगर जब उन लोगों ने जाना वगैरा पकाने के लिये जा ब जा आग जलाई तो जमीरे में अेक दम उ-र-कत पैदा हुई और वोह मुकम्मल तौर पर पानी के अन्दर उतर गया जिस से बहुत सारे सिपाही डूब गये ! वोह जमीरा दर अस्ल जमीन का कोई टुकड़ा न था, हिन्दूस्तान के समुन्दर में पाई जाने वाली देव हैकल मछली रारकाल थी ! अल्वाह عَرَّ كَرَّ की कुदरत से येह मछली इस कदर लम्बी यौडी है के जब सत्हे समुन्दर पर उभर आती है तो छोटा सा जमीरा मा'लूम होती है ! मा'लूम हुवा के रारकाल मछली निहायत सप्त जान होती है जभी तो उस की जाल में भूँटे गाडे गये तब भी उस पर कुछ असर न हुवा मगर जब आग जलाई गई तो उसे भूब जलन

﴿قَالَ لَهُ مُرْتَضَىٰ: جَلَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक वोह बह भप्त हो गया. (उंन)

मयी और ठन्डक हासिल करने के लिये उस ने पानी में डुबकी लगा दी और ज़िम्नन उस ज़िन्दा जज़ीरे पर मौजूद लोग डूब गये.

(عجائب الحيوانات ص २२९ بتصرف)

जामोर

जामोर एक छोटी सी मछली है. इस मछली को इन्सान की आवाज बड़ी बली मा'लूम होती है, इसी लिये किशती आती देख कर येह उस के साथ साथ हो लेती है ताके इन्सानों की आवाज सुनती रहे, जब येह किसी बड़ी मछली को किशती पर हम्ला करने के लिये आते देख लेती है तो झौरन झुटक कर उस के कान के अन्दर घुस जाती है और बराबर झुटकी रहती है, बड़ी मछली शिदते तकलीक से किशती से रुभ मोड कर साहिल की तरफ लपकती है ताके किसी पथर पर अपना सर मारे, युनान्चे जब उसे कोई पथर नजर आता है तो वोह उस पर जोर जोर से अपना सर पटप्ने लगती है यहां तक के मर जाती है. जामोर की इस भूमी के पेशे नजर माहीगीर उस से बहुत प्यार करते हैं और उसे पिलाते रहते हैं और अगर कभी जामोर जल में इंस ज़ाये तो उसे छोड देते हैं.

(حياة الحيوان ج २ ص १)

वैल मछली

आज भी ज़िन्दा रहने वाले ज़ानवरों में वैल मछली सब से बडा ज़ानवर है और वैल मछलियों की एक किस्म जो "ब्लू वैल" कहलाती है वोह साईज और वज़न के अतिबार से वैल मछलियों में सब से बडी होती है. एक ब्लू वैल औसी भी पकडी जा चुकी है जो के 108 कुट लम्बी और 131 टन (या'नी 3668 मन) से ज़ियादा वज़नी थी !

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَبُيُوتَسْمُ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा।
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ायत मिलेगी. (कुरआन))

प्लू वैल बर्फ़ानी समुन्दरों में रहती है. तैरते हुअे ँस की रफ़्तार क्रियादा से क्रियादा 22.68 मील ङी घन्टा ढोती है और उस वक्त रफ़्तार की वजह से उस की ताकत 520 घोडों की ताकत के बराबर ढोती है. प्लू वैल का बय्या पैदाँश के वक्त 25 कुट तक लम्बा और 7 टन (या'नी 196 मन) से क्रियादा वज़्नी ढोता है. 1932 सि.ँ. में 89 कुट लम्बी और 119 टन (या'नी 3332 मन) वज़्नी अेक प्लू वैल मछली पकडी गँ थी, ँस मछली की सिर्फ़ ङबान का वज़्न तीन टन (या'नी 84 मन) था. (अेक टन में 28 मन और अेक मन में 40 सैर ढोते हैं) (عجائبُ الْخَيَواناتِ ص ٢٣٠ مُلَخَّصًا)

मनारा

येह समुन्दरी मछली है जे पानी में मनारे की तरह सीधी षडी ढो जाती है और फिर क्रिशियों पर अपने आप को गिरा कर उन्हे गर्क कर देती है. जब मल्लाह ँस की आहट पाते हैं तो नरसिंघा और सिलफ़यी वगैरा बज्जते हैं ताके षौङ्गढा ढो कर भाग ज्जअे. मनारा मछली क्रिशती वालों के लिये बहुत षडी आरुत है. (حياة الْخَيَوانِ ج ٢ ص ٤٤٧)

कुडी

येह अेक अज्जबो गरीब मछली है, ँस के सर पर अेक बहुत ढडा कांटा ढोता है. जब लूक लगती है तो जिस (ढडे से ढडे) ज्ञानवर को ल्मी अपना शिकार बनाना याहे उस पर ज्ज गिरती है और वोह ज्ञानवर उसे आँ रोजी समज कर निगल जाता है और येह अन्दर पढोंय कर अपने कांटे से उस का पेट यीर कर बाहर आ जाती है ! और यूं अपना शिकार करने वाले ज्ञानवर को षुद शिकार कर लेती और फिर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا ٹિક لُوا اور اُس نے مُجھ پر دُرُود شَرِيف نہ پढا اُس نے جُکّا کي. (عہدہ/سن)

ઉંસે મઝે સે ખાને લગતી હે. ઉંસ કે શિકાર કા બચા ખુચા દૂસરે દરિયાઈ જાનવર ભી ખાતે હે. જબ માહીગીર ફૂકી મછલી કા શિકાર કરને કી કોશિશ કરતે હે તો અપને કાંટે સે હમ્લા કર કે કિશતી ફાડ દેતી ઔર ડૂબતે હુએ માહીગીરોં કો હડપ કર જાતી હૈ ! ફૂકી કા શિકાર કરને વાલે ઈસી મછલી કી ખાલ અપની કિશતી પર ચઢા લેતે હે ક્યૂંકે ઈસ કી અપની ખાલ પર ઈસ કા કાંટા અસર નહીં કરતા ! (أيضاً ص ۳۱۳)

કાતૂસ

કાતૂસ બહુત બડી મછલી હૈ, બડી બડી કિશતીયોં કો તોડ ફોડ ડાલતી હૈ. કાતૂસ મછલી મેં એક અજબ બાત યેહ હૈ કે અગર કિસી કિશતી મેં હૈઝ વાલી ઔરત સુવાર હો તો ઉંસ કિશતી કે કરીબ ભી નહીં જાતી ! મલ્લાહ (યા'ની કિશતી ચલાને વાલે) કાતૂસ મછલી કો ખૂબ જાનતે હે, અગર કહીં ઈસ કા સામના હો જાએ તો ઉંસ કે સામને ઔરત કે હૈઝ સે આલૂદ કપડે ફેંકતે હે જિસ સે યેહ ભાગ જાતી હૈ.

(عجائبُ الْحَيَوَانَاتِ ص ۲۲۰ مُلَخَّصًا)

દુલ્ફીન (સોસ મછલી)

દુલ્ફીન બહુત હી પ્યારી મછલી હૈ, કિશતી વાલે ઈસે દેખ કર બેહદ ખુશ હોતે હે. દુલ્ફીન મછલી અગર કિસી ઈન્સાન કો ડૂબતે હુએ દેખ લે તો ફોરન ઉંસ કી મદદ કો પહોંચ જાતી હૈ ઔર ઉંસે ધકેલતી હુઈ કનારે કી તરફ લે જાતી હૈ, બા'ઝ અવકાત ડૂબતે આદમી કે નીચે હો કર ઉંસે અપની પીઠ પર સુવાર કર લેતી હૈ ઔર બા'ઝ અવકાત અપની દુમ સે ઉંસે સાહિલ કી તરફ લે આતી હૈ. (الحيوانات) દુલ્ફીન મછલી મિસ્ર કે દરિયાએ નીલ મેં પાઈ જાતી હૈ.

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَهُوَ سَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पडेगा में डियामत के दिन उस की शफाअत करेगा। (कुरआन)

परों वाली मछली

समुन्दर में अेक बहुत बडी मछली अैसी त्मी है जो अगर कल्मी ँत्तिकाक से कम गहरे पानी में आ जाअे और पानी वहां से फुशक हो जाअे तो वोह डीयड में तडपने लगती है और मु-तवातिर सात घन्टे तक तडपती रहती है, ँस ँज्जतिराब (या'नी बे करारी) से उस की ખाल फूट जाती है और नीये से ढो बडे बडे पर निकल आते हैं जिन से उड कर वोह फिर समुन्दर में यली जाती है.

(أيضاً ص १२२)

मिन्शार

“बुहैरअे अस्वद” में पहाड जैसी अेक कवी हैकल मछली पाई जाती है जिस का नाम मिन्शार है, ँस की पीठ पर सर से ले कर दुम तक आबनूस¹ की तरह काले काले और आरे के दन्दाने जैसे बडे बडे कांटे ढोते हैं, ँस का अेक दन्दाना ढो ढाथ या'नी तकरीबन अेक मीटर के बराबर ढोता है, सर के द्वाअें बाअें तकरीबन पांय पांय मीटर लम्बे ढो कांटे ढोते हैं. अपने ढोनों कांटों से समुन्दर का पानी खीरती हुई यली जाती है जिस से फौफनाक आवाज सुनाई देती है. अपने मुंह और नाक से पानी की पियकारी निकालती है जो आस्मान की तरफ इव्वारे की शकल में नजर आता है. फिर उस के कतरे किशती वगैरा पर बारिश के कतरों की तरह गिरते हैं येह मछली अगर किसी किशती के नीये पछोंय जाअे तो उसे तोड फोड डालती है. जब किशती वाले उसे देअते हैं तो फौफनाह ढो जाते हैं और उस से छिफाजत के लिये अद्लाह

¹ : आबनूस : जनूब मशरिकी अेशिया के अेक दरपत का नाम है जिस की लकडी सप्त, वजनी और सियाह ढोती है.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : मुठ पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे बिचे तदारत है. (अबुल)

عَزَّوَجَلَّ की બારગાહ મેં ગિડગિડા કર દુઆએં માંગતે હેં.

(حَيَاةَ الْحَيَوَان ج ٢ ص ٤٤٨)

કૌસજ

કૌસજ મછલી જિસે “સમુન્દરી શેર” કહતે હેં, ઈસ કી સૂંડ આરે કી તરહ હોતી હે, કભી ઈન્સાન કો પા લેતી હે તો દો ટુકડે કર કે ચબા જાતી હે, પાની મેં જાનવરોં કો ભી અપને આરે સે ઈસ તરહ કાટ ડાલતી હે જિસ તરહ તલવાર કિસી ચીઝ કો કાટ દેતી હે. કૌસજ કે દાંત ઈન્સાન કે દાંતોં જૈસે હોતે હેં, સમુન્દરી જાનવર ઈસ સે ખૌફઝદા હો કર દૂર ભાગતે હેં, કૌસજ કી અજબ બાત યેહ હે કે અગર રાત કે વક્ત ઈસ કો શિકાર કર લેં તો ઈસ કે પેટ સે ખુશબૂદાર ચરબી નિકલતી હે, અગર દિન મેં શિકાર કરેં તો નહીં નિકલતી ! બસરા શરીફ કે દરિયાએ દિજલા મેં ખાસ મૌસિમ કે અન્દર ઈસ કી બ કસરત પૈદાવાર હોતી હે.

(ايضاً ص ٤٢٥ مُلَخَّصاً)

ગાફિલ મછલી હી જાલ મેં ફંસતી હે

સુવાલ : કયા મછલી કે જાલ મેં ફંસને કા ભી કોઈ સબબ હે ?

જવાબ : બા’ઝ રિવાયાત સે પતા ચલતા હે કે વોહી મછલી માહીગીર કે કાંટે યા જાલ મેં ફંસતી હે જો ઝિકુલ્લાહ સે ગાફિલ હો જાતી હે યુનાન્થે મેરે આકા આ’લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નાત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ بِان ફતાવા ર-ઝવિયા (મુખર્રજા) જિલ્દ 9 સફહા 760 પર ફરમાતે હેં :
 مَا أُخِذَ طَائِرٌ وَلَا حَوْثٌ إِلَّا بِتَضْيِيعِ التَّسْبِيحِ :
 અબુશૈખ ને રિવાયત કી :
 યા’ની “કોઈ પરિન્દા ઓર મછલી નહીં પકડી જાતી મગર તસ્બીહે

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : توم جذاً لمى لى موز पर दुइद पढे के तुम्हारा दुइद मोज तज पछोयता है. (ज़रन)

ईलाही छोड देने से.” (तفسیر ترمذی ج ۴ ص ۱۸۴) मल्कूनाते आ'ला उरतर सईडा 531 पर है : अडले कश्क इरमाते हैं : “तमाम ज्ञानवर तस्बीह (या'नी अल्लाह तआला की पाकी बयान) करते हैं, जब तस्बीह छोड देते हैं उसी वक्त उन को मौत आती है. हर पत्ता तस्बीह करता है, जिस वक्त तस्बीह से गइलत करता है उसी वक्त दरप्त से जुदा हो कर गिर पडता है.”

म-दनी मुन्नी और गाइल मछलियां

ईस सिक्सिले में अेक ईमान अइरोज डिकायत मुला-डजा हो, मुल्के यमन में अेक शप्स दरिया के कनारे मछलियां पकड रहा था, उस की बख्ती ली पास ही बैठी थी, जब ली कोई मछली हाथ आती वोड उसे पीछे रभी हुई टोकरी में डाल देता, बख्ती मछली उठा कर दोबारा पानी में डाल देती. जब वोड शप्स शिकार से इरिग हुवा और मुड कर देभा तो टोकरी में अेक ली मछली न थी ! अपनी बेटी से पूछा : मछलियां कहां गई ? उस ने जवाब दिया : ध्यारे अब्बू ! आप ही ने तो बताया था के उदीसे पाक में है : “जल में वोही मछली इंसती है जे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिक से गाइल हो जाती है.” लिहाजा मुजे अख्श नही लगा के उम वोड मछली भाअें जे जिकुल्लाह से गाइल हो गई. अपनी बख्ती की ज्ञान से अैसी पुर डिक्मत बात सुन कर उस शप्स पर रिक्त तारी हो गई और वोड रोने लगा और उस ने मछली पकडने का कांटा केंक दिया.

(صفة الصفوة ج ۴ ص ۳۰۷ مُلَخَّصًا)

अल्लाहु रब्बुल ईज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सदके इमिन بجاه النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

डमारी बे हिसाब मगिरत हो.

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : جیس نے مولا پر દસ મરતબા દુરૂદે પાક પઢા અલલાહ عُزَّوَجَلَّ ઊંસ પર સો વરહમતે નાઝિલ ફરમાતા છે. (بخاری)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ
 اَدُّکُمْرُوا اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ
 صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

ગાફિલ મછલિયાં ખાના કેસા ?

સુવાલ : તો ક્યા “ગાફિલ મછલિયાં” નહીં ખાની ચાહિએ ?

જવાબ : એસા નહીં હૈ, મછલિયાં ખાના હલાલ હૈ.

કૌન કૌન સા આબી જાનવર હલાલ હૈ ?

સુવાલ : પાની કા કૌન કૌન સા જાનવર હલાલ હૈ ?

જવાબ : મછલી કે ઈલાવા પાની કા હર જાનવર હરામ હૈ જૈસા કે કુ-કહાએ અહનાફ صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ફરમાતે હૈં : “પાની કે હર જાનવર કા ખાના હરામ હૈ સિવાએ મછલી કે, કે ઈસ કા ખાના હલાલ હૈ.” (عالمگیری ج ۵ ص ۲۸۹) ઈમામ બુરહાનુદીન મરગીનાની જાએગા સિવાએ મછલી કે, યહાં તક કે બહુત છોટી મછલી, સાંપ નુમા મછલી ઔર મછલી કી દીગર અક્સામ ભી ખા સકતે હૈં.” (هدایہ ج ۶ ص ۳۰۳)

મછલી કી તા'રીફ

સુવાલ : મછલી કી તા'રીફ બતા દીજિયે.

જવાબ : દા'વતે ઈસ્લામી કે દારુલ ઈફતા કે એક મુફતી સાહિબ કી મા'લૂમાતી તહકીક કદરે અલ્ફાઝ કે તસરુફ કે સાથ પેશ કી જાતી હૈ. મછલી કી કોઈ હત્મી (FINAL) તા'રીફ તો ફિક્હ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا ٹیکہ ہو اور وہ صوفیوں پر دھڑک شریک نہ پڑے تو وہ صوفیوں میں سے کھڑے ترین شخص ہے۔ (زیوریت)

या लुगत की कुतुब में नजर से नहीं गुजरी कटीम (या'नी पुराने) और जदीद (या'नी नये) माहिरीन ने इस के मु-तअद्विक जो भाते बयान की हैं उन का जुलासा येह है के मछली ठन्डे पून वाला आभी (या'नी पानी का) जानवर है, इस का शुमार उन हैवानात में होता है जो इकारिया (Vertebrate) या'नी रीढ की हडी वाले जानवर हैं, लेकिन बहुत सारी मछलियां ऐसी हैं जिन में रीढ की हडी नहीं होती. सांस लेने के लिये अक्सर मछलियां गलफडे इस्ति'माल करती हैं. अक्सर मछलियां अन्डे देती हैं लेकिन बा'ज बख्ये भी जनती हैं, कुछ मछलियां ऐसी हैं जो पानी पर मुप्तसर उडान भी करती हैं.

मछली के सिवा हर आभी जानवर हराम है

इकडे ह-नई की मशहूर किताब “बदाईउस्सनाअेअ” में है : “मछली के सिवा पानी के तमाम जानवर हराम हैं, मछली हलाल है सिवाअे उस मछली के जो फुद मर कर पानी की सतह पर उलट गई हो. येही हमारे अस्हाब का कौल है, मछली की तमाम अक्सांम हलाल होने में बराबर हैं चाहे वोह जिरीस हो या मारमाही (जो के सांप से मिलती जुलती होती है, इसे “बाम मछली” भी बोलाते हैं वोह) हो या इस के ठलावा कोई किस्म, क्यूंके हम ने मछली के हलाल होने पर जो दवाइल जिक किये हैं उन में ऐसी कोई तफ्सील नहीं के येह मछली हलाल है या वोह मछली, सिवाअे उस के जिस की दलील के जरीअे तप्सीस की गई (या'नी मप्सूस कर लिया गया) हो. और हजरते सय्यिहुना अलिय्युल

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غِيُورًا وَهُوَ سَلِيمٌ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर दुरदूदे पाक न पड़े. (८)

मुर्तजा शेरु पुढा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** और **عَزَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** से जिर्रीस और नर मछली की ँबाहत (या'नी जाँठ होना) मरवी है जब के किसी और से ँस का ँवलाङ्क मन्कूल नही है तो येह ँजमाअ हो गया." (بَدَائِعُ الصَّنَائِعِ ج 4 ص 147، مَلَخَّمًا)

मछली की हजाराँ किसमें हैं

“बदाँठउस्सनाअेअ” की ँभारत से वाजेह हुवा के मछली की तमाम ही अकसाम हलाल हैं हां ँतना ज़रूर है के मछली की सेंकडों बलके हजाराँ अकसाम हैं बा'ज अकसाम अैसी हैं के जिन में उ-लमा को सरा-हतेँ करना पडीं के येह जानवर मछली है ँस को गैर मछली कहना दुरुस्त नही. बा'ज जानवर वोह हैं के जिन के मछली होने या न होने में अहले लुगत को ँप्तिलाङ्क रहा जैसा के जींगा ँस के मछली होने या न होने में ँप्तिलाङ्क है लेकिन दुरुस्त येही है के येह मछली है. ँस बारे में हत्मी जाबिता येह है के लुगत और अहले अरब के उई का अे'तिभार मो'तबर होगा के अ-रबी में जिस को **समक** (या'नी मछली) कहते हैं अहादीस में ँस को हलाल किया गया है और ँस लङ्ग के दुरुस्त मद्मल का तअय्युन अहले अरब साहिबाने लुगत का उई ही कर सकता है. अलबत्ता जिस चीज के बारे में **मु-तअय्युन** (या'नी तै) हो जाओ के येह मछली है तो उस का पाना हलाल है, याहे उस के विये समक के ँलावा कोँ और लङ्ग म-सलन हूत और नून वगैरा ँस्ति'माल किया गया हो.

समुन्दरी अजाबनाम अगणित हैं

मछली की बहुत सारी अकसाम वोह हैं जिन के बारे में शुद्ध

करमाने मुस्तफ़ा، صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ छोड़े. (कोरोल)

ही से लोगों में तरदुद (या'नी तज़ब्ज़ुब, शक व शुबा) रहा के येह मछली है बी या नहीं ! बा'ज अकसाम तो अकलों को छैरान कर देने वाली हैं, समुन्दर के बारे में थूके कडा जाता है : “الْبَحْرُ لَا تُحْضَىٰ عَجَائِبُهُ” या'नी समुन्दरी अज्ञातबात शुमार में नहीं आ सकते. येही वजह है के समुन्दर से नित नई मज़्लूक़ात की दरयाफ़त के साथ साथ मछलियों की भी अजब से अजब तरीन अकसाम की इराहमी का सिखिसला जारी व सारी है. लिहाज़ा बा'ज मछलियों से मु-तअल्लिक येह बात हर दौर के उ-लमा में जेरे बइस रही है के येह यीज मछली है या नहीं.

दो मछलियों के मु-तअल्लिक

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كِي तहकीके अनीक

इतावा र-जविय्या शरीफ़ जिल्द 20 सफ़हा 323 ता 326 पर ईसी तरह की दो मछलियों पर उम्दा तहकीक बयान की गई है, अक मछली का नाम जिरीस और दूसरी का नाम अ-रबी में जिरी इरसी में मारमाही और उर्दू में बाम मछली है येह दोनों मछली अपनी शकल में ऐसी हैं के इन के मछली होने या न होने में न सिर्फ़ येह के अवाम में तरदुद या'नी शक व शुबा रहा बल्के बा'ज कु-कडाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام के बी ईस तरह के अकवाल कुतुब में नकल हुअे जिन के मुताबिक मछली न मानने की बिना पर उन का जाना जईज नहीं था लेकिन आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा जान رَحْمَةُ الرَّحْمَن عَلَيْهِ ने कु-कडाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام की ज़े तहकीक ईस मकाम पर नकल की है उस में येह

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज़ पर दुव्दुद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अिन सदी)

साबित किया है के येह दोनों मछलियां हैं और हलाल हैं, एमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह भी बयान किया के अहले लुगत एन दोनों मछलियों को अेक ही समज़ते हैं लेकिन हु-क़डाअे किराम رَحْمَتُ اللهِ السَّلَام के नज़दीक येह दोनों अलग अलग मछलियां हैं. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ज़िरीस मछली के मु-तअल्लिक इरमाते हैं : “ज़िरीस अेक कसीरुल वुजूद मछली सवालिल (समुन्दर के कनारों) पर अरज़ानी (या'नी कसरत) से बिकने वाली है.

हिकायत

हज़रते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ “मूसूत” में रिवायत इरमाते हैं : या'नी अम्रह बिनते अभी तुबैय ने क़डा : मैं अपनी कनीज़ के साथ ज़ा कर अेक ज़िरीस अेक क़ड़ीज़ गेहूँ को (या'नी तकरीबन 46 किलो ग्राम गेहूँ के बदले) खरीद कर लाई ज़ो ज़म्बील (या'नी टोकरी) में न समाई, अेक तरफ़ से सर निकला रहा दूसरी तरफ़ से दुम, एतने में मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم का गुज़र हुवा, इरमाया : कितने को ली ? मैं ने कीमत अर्ज़ की. इरमाया : “क्या (ही) पाकीज़ा थीज़ है और कितनी अरज़ां (या'नी सस्ती) और मु-तअल्लिकीन पर कितनी वुस्अत वाली.”

ज़िरीस के मु-तअल्लिक मुप्तलिफ़ अक़वाल

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद इरमाते हैं : “हयातुल ह-यवान” में है : ज़िरीस येह मछली है ज़ो सांप के मुशाबेह (या'नी मिलती जुलती) है एस की ज़म्अ ज़रासी है, एस को ज़िरी भी कहते हैं, इरसी में एसे मारमाही कहते हैं, और हम्ज़ा की बहूस में गुज़रा के येह

करमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. मुज़ पर कसरत से दुर्रुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्दिरत है. (रायज़ि)

अन्कलैस है. ज़ाहिर ने कहा : येह पानी का सांप है इस का येह हुकूम है के वोह उलाल है. मगर हु-कहाअे किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ जिसे ज़िरीस कहते हैं वोह यकीनन “मारमाही” (या’नी आम मछली) के सिवा दूसरी मछली है के मुतून व शुर्ह व इतावा में तसरीहन (या’नी वाजेह तौर पर) दोनों का नाम जुदा जुदा जिक़ इरमाया, ला जरम (या’नी बेशक) “मुग़रिब” में कहा : هُوَ غَيْرُ الْمَارْمَاهِي 1 (या’नी वोह मारमाही का गैर है. ت) अल्लामा इब्ने क्माल आशा “इस्लाह व इजाह” में इरमाते हैं : ज़िरीस मछली की डिस्म है जो मारमाही या’नी आम मछली के इलावा है. “येह मुग़रिब” (नामी किताब) में मज़कूर है. इन दोनों को अला-हदा इस लिये जिक़ किया के इन के मछली होने में अफ़ा (या’नी पोशी-दगी) है.” (इतावा २-अविद्या, जि. 20, स. 324, 330)

नर और मादा मछली में यन्ट नुमायां इर्क

सुवाल : इस जवाब में “नर मछली” का तज़क़िरा किया गया है. बराह्ने करम ! नर और मादा मछली की शनाप्त की कुछ वज़ाहत कर दीजिये.

जवाब : नर और मादा मछली के तीन नुमायां इर्क मुला-हज़ा हों :
 ﴿1﴾ आम डालात में नर मछली का जिस्म लम्बा और बडा होता है जब के मादा मछली का जिस्म कदरे (या’नी कुछ) गोल और नर मछली से निस्बतन छोटा होता है अलबत्ता “नस्व बढाने” के दिनो में मादा मछली का पेट नर मछली से बडा हो जाता है ﴿2﴾ नर मछली का रंग वाजेह और साफ़

करमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अक दुइद शरीक़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उलुद पढाउ जितना है. (मुराज़)

डोता है जो अक्सर नीला (Blue) और नारंगी (Orange) डोता है जब के मादा मछली की रंगत भूरी (Brown) डोती है ﴿3﴾ नर मछली के पेट के नीचे अक पर (Fin) डोता है जो मादा मछली के मुकाबले में बडा डोता है, उस पर (Fin) के नीचे नर या मादा डोने की अलामात डोती हैं.

बिगैर गलङ्गे की मछली जाना कैसा ?

सुवाल : बिगैर गलङ्गे की मछली हलाल है या हराम ?

जवाब : हलाल है.

मछली की डौन सी किस्म हराम है ?

सुवाल : क्या मछली की कोई किस्म हराम ली है ?

जवाब : नहीं औसी कोई किस्म नहीं, सिर्फ़ वोह मछली हराम है जो दरिया में फुद ब फुद मर कर उलट जाअे. हां ! अगर किसी केभीकल या हथियार वगैरा की जर्ब से पानी डी में मर कर उलट गई तब ली हलाल है जैसा के सदरुशशरीअह, भदरुत्तरीकह डउरते अल्लामा मौलाना मुईती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फरमाते हैं : “जो मछली पानी में मर कर तैर गई या'नी जो बिगैर मारे अपने आप मर कर पानी की सत्ह पर उलट गई वोह हराम है, मछली को मारा और वोह मर कर उलटी तैरने लगी, येह हराम नहीं.” (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 324)

मछली के हलाल होने की दीगर सूरतें

बहारे शरीअत में है : “पानी की गर्मी या सर्दी से मछली मर

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه وسلم : जिस ने किताब में मुझ पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग्फार करते रहेंगे. (उं.३)

गर्ध या मछली को डोरे में बांध कर पानी में डाल दिया और मर गर्ध या जाल में इंस कर मर गर्ध या पानी में कोर्ध ऐसी यीज डाल दी जिस से मछलियां मर गर्ध और येह मा'लूम है के उस यीज के डालने से मरीं या घडे या गढे में मछली पकड कर डाल दी और उस में पानी थोडा था ईस वजह से या जगह की तंगी की वजह से मर गर्ध ईन सब सूरतों में वोह मरी हुई मछली **डलाल** है." (अंजन, ०१२, १९) अल गरज सिई वोडी मछली डराम है जो बिगैर किसी जालिरी सबभ के पानी में तब्ई मौत (या'नी भुद ब भुद) मर कर उलटी तैर जाये.

परिन्डे की योंय से मछली छूट कर गिरी.....

सुवाल : परिन्डा मछली का शिकार कर के उडा, मछली उस से छूट कर गिरी, देखा तो मरी हुई थी, भाई जायेगी या नहीं ?

जवाब : भाई जायेगी क्यूंके मौत का सबभ परिन्डा बना, तब्ई मौत नहीं मरी.

मछली के पेट से अगर मछली निकले तो ?

सुवाल : बडी मछली भरीद कर जब काटी तो उस के पेट में से छोटी मछली निकली, पेट से निकली हुई मछली भा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : पेट से निकली हुई मछली में अगर मा'मूल के मुताबिक सभ्ती भौजूद है (या'नी FRESH) है तो उसे ली भा सकते हैं और अगर उस में तगय्युर आ युका है या'नी नर्म पड कर सभ्ती बढबूदार हो युकी है तो नहीं भा सकते. हु-कहाये किराम **رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام** करमाते हैं, "मुडीते भुरडानी" में है : "मछली

करमाने मुस्तकاً عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर ओक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

का शिकार किया और उस के पेट में दूसरी मछली निकली तो उसे ली जाया जाये क्यूंके येह पडली मछली के पकडने और दूसरी जगह की तंगी (या'नी पेट के अन्दर दम घुट जाने) की वजह से मरी है. और येह मस्जला दलावत करता है के अगर ताई मछली के पेट में से दूसरी (केश) मछली पाई गई तो वोह पाई जायेगी और अगर वोह ली ताई हो तो नहीं पाई जायेगी, और ईमाम मुहम्मद عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से रिवायत है के उस मछली के बारे में जो कुत्ते के पेट से (के में) निकले, के उस के जाने में कोई हरज नहीं जब के उस की डालत मु-तगय्यर (या'नी तण्डील शुदा) न हो क्यूंके उस की भौत "सभभ" से हुई है." (٤٤٧٧٠٦٠٦) (ताई : उस मछली को कडते हैं जो बिगैर किसी जाहिरी सभभ के भुद भ भुद मर कर दरिया में उलटी तैर जाये)

मछली के अन्डे

सुवाल : मछली के अन्डे आ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : आ सकते हैं. बडे साईज के अन्डे ली डोते हैं मगर हजारों लाभों की ता'दाद में अशबाश के दानों की तरह बारीक पीले रंग के अन्डे जिन पर कुदरती जिल्ली यढी हुई डोती है वोह काई लजीज डोते हैं, ईस को "आनी" ली भोलते हैं, जब कभी आप अपनी मछली कटवाओं तो काटने वाले को भोल दीजिये के अगर अन्डे निकलें तो हमें दे दें, क्यूंके उमूमन उजरत पर मछली काटने वाले मछली के अन्डे आलाईशों के

કરમાને મુસ્તફા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ
(ભૂલ ગયા. (قرآن))

સાથ ડાલ દેતે હૈં, ફિર નિકાલ કર બેચતે હૈં, ઉન કો ભી ચાહિયે કે ઐસા ન ક્રિયા કરેં, જિસ કી મછલી હૈ ઉસે દે દિયા કરેં.

પાની મેં કેમીકલ કે ઝરીએ મછલિયાં મારના કેસા ?

સુવાલ : નહર ઔર તાલાબ મેં કેમીકલ ડાલ કર યા કરન્ટ છોડ કર મછલિયાં માર કર શિકાર કરના કેસા ?

જવાબ : કેમીકલ ડાલને યા કરન્ટ છોડને કે તરીકે શર-ઈ એ'તિબાર સે જાઈઝ નહીં કે ઈસ સે મછલિયોં કે સાથ સાથ દીગર ગૈર મૂઝી આબી મખ્લૂક ભી બિલા વજહ હલાક હોગી.

કેમીકલ સે મારી હુઈ મછલિયાં ખાના કેસા ?

સુવાલ : બમ યા કેમીકલ કે ઝરીએ મારી હુઈ મછલિયાં ખાને કી ઈજાઝત હૈ યા નહીં ?

જવાબ : અગર ઉન મેં ઝહરીલા અસર વગૈરા ન હો તો ખાના બિલા શુબા જાઈઝ હૈ.

બમ ઘમાકે સે મછલિયાં મારના કેસા ?

મછલી કે બારે મેં “ફૈસલા ફિક્હી બોર્ડ, દેહલી” (16 જુમાદલ ઊલા 1424 હિ. મુતાબિક 17-7-2003) કા મન્જૂર શુદા એક સુવાલ ઔર ઉસ કા જવાબ પઢિયે ઔર મા'લૂમાત મેં ઈજાફા કીજિયે :

સુવાલ : મછલિયાં પકડને કે લિયે એક બમ ફોડા જાતા હૈ જિસ સે મછલિયાં પાની મેં હી મર જાતી હૈં ફિર ઉન્હેં પકડ કર બાઝાર મેં લાયા જાતા હૈ, હમેં ઈલ્મ નહીં હૈ કે યેહ મછલી પાની મેં મરી યા પાની કે બાહર ! ઐસી સૂરત મેં ઈન મછલિયોં કા

﴿۱﴾ فرمانے میں: حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक
 वोह बट् अम्त हो गया. (उरु)

आना जायज है या नहीं ?

जवाब : ﴿१﴾ भम धमाके से मरी हुई मछलियों को आना जायज है (क्यूं) के उस की मौत का सबभे जाहिर (या'नी जाहिरि वजह) मा'लूम है. हराम सिर्फ वोह मछली होती है जिस के मरने का कोई सबभे जाहिर (या'नी जाहिरि सबभ) न मा'लूम हो, न ही कोई अलामत सबभे मौत पर दाल्ल (सुबूत बनता) हो या'नी येह मु-तअय्यन (या'नी करार पा युका) हो के वोह अपनी मौत आप मर कर उलट गई है. हां अगर भम झोडने से मछली में कोई सम्भियत (या'नी जहरीला पन) या मुजिर (या'नी नुकसान देह) कैफियत पैदा हो तो इस के बाईस उस का आना मन्नुअ होगा. ﴿२﴾ भम धमाके से अगर दूसरे गैर मूजी (या'नी ईजा न देने वाले) जानवर न मरें न उन्हें ईजा पड़ोये तो शिकार का येह तरीका जायज वरना उन (गैर मूजी जानवरों) के कत्ल व ईजा से मन्फअत वाबस्ता (या'नी इन को मारने या तकलीफ पड़ोयाने से झायेदा) न होने की वजह से (शिकार का येह तरीका) ना जायज है के येह गैर मूजी जानवरों पर जुल्म है. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

जल में गैर मूजी जानवर इंस जायें तो ?

सुवाल : जल में मछली के साथ साथ गैर मूजी जानवर म-सलन केडे वगैरा भी इंस जाते हैं क्या उन को मरने दिया जाये ?

जवाब : इस सिद्धिसे में जामिआ अशरफिया मुबारक पूर शरीफ (अल हिन्द) के दारुल ईफता का इतवा येह है : जल से मछली का

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइडे पाक पढा अद्लाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (१)

शिकार करना ज़ाहज़ है, अगर ज़ाल में मछली के धलावा दूसरे गैर भूज़ी जानवर इंस ज़ांते तो उन्हें ज़ाल से निकाल कर दरिया में डाल दें, क्यूंके उन्हें बिला वजह शर-ध मारना ज़ाहज़ नहीं. उदीस में है दुजुरे अकदस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जिस ने थिडिया या डिसी जानवर को नाहक कतल किया उस से अद्लाह तआला कियामत के दिन सुवाल करेगा. अर्ज़ किया गया : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! उस का हक क्या है ? इरमाया के : “उस का हक येह है के ज़हू करे और भाअे येह नहीं के सर काटे और इंक दे.”

(مسند امام احمد بن حنبل ج ٢ ص ٥٦٧ حديث ٦٥٦٢، نسائي ص ٧٧٠ حديث ٤٣٥٥)

मछली की हड्डियां भा सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : मछली की हड्डियां भा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : भा सकते हैं. मछली की हड्डियां उभूमन सप्त होती हैं और भाई नहीं जातीं. मगर भा'ज की यबनी या'नी कुरकुरी और मुलायम होती हैं. म-सलन समुन्दर के पापलेट और सुरमध मछली वगैरा की हड्डियां नर्म और लज़ीज़ होती हैं धन को भूब यभाईये और अथी तरह यूस कर बया हुवा यूरा इंक दीजिये. इतावा र-उविय्या में है : “जानवर हलाल मज़ूह की हड्डी किसी किस्म की मन्अ नहीं जब तक उस के पाने में मज़रत (या'नी नुकसान) न हो, अगर हो तो ज़रर की वजह से मुमा-न-अत होगी, न के इस लिये के हड्डी फुद मन्ूअ है.”

(इतावा र-उविय्या, जि. 20, स. 340)

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुळ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طرقي)

मछली की ખાલ ખાના કેसा ?

सुवाल : मछली की ખાલ ખा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ખा सकते हैं. उमूमन लोग मछली की ખाल पढले ही से या पकने के भा'द निकाल कर डेंक देते हैं औसा न क्रिया ज़ाये, अगर कोई मजबूरी न हो तो मछली की ખाल भी ખा लेनी याहिये, के येह भी अल्लाहु रब्बुल ँज्जल की ने'मत है और भा'ज मछलियों की ખाल तो निहायत लजीज होती है. हां किसी मछली की ખाल सप्त हो और यबाने में न आती हो तो डेंकने में हरज नहीं.

मछली पकाने का तरीका

सुवाल : क्या मछली पकाने का कोई मजूस तरीका है ?

जवाब : मछली पकाने के कई तरीके हैं : सब से बेहतर येह है के नमक मसाला यढा कर कोअलों पर सेंक ली ज़ाये, ओवन (OVEN) में भी सेंक सकते हैं. बहुत ज़ियादा पका कर या तेज आंय पर तल कर खाने से ँस के फ़ाअदे में कमी आ जाती है. हमारे (या'नी सगे मदीना ﷺ के) घर में मछली पकाने का तरीका येह है के पढले यन्द घन्टे पानी के भरतन में त्मिगो कर रख देते हैं, ँस तरह करने से ँस की बू में काई कमी आ जाती है. सालन बनाने में तेल के ँलावा सिई यार यीजें या'नी नमक, मिर्य, पिसा हुवा लहूसन और पिसा हुवा भुशक धनिया ँस्ति'माल करते हैं, ँस तरह अगर “फ़ाँ पेन” में जला कर मसाला भुशक कर लें तो मछली की निहायत लजीज डिश

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جيس کے پاس میرا جیک ڈુوا اور اُس نے مجھ پر دُرُودِ پاک نہ پڑھا تہذکیک
 وولہ بَد بَظت ڈو گیا. (ابن ماجہ)

બન જાતી છે. મસાલા બિગૈર ખુશક કિયે ભી ખા સકતે હૈં ઓર હસબે ઝરૂરત પાની ડાલ કર શોરબા ભી બનાયા જા સકતા છે. તહરીર કર્દા કે ઈલાવા હમારે યહાં મછલી પકાને મેં ઉમૂમન ઓર કોઈ ચીઝ મ-સલન પિયાઝ, આલૂ, કાલી મિચ્ય વગૈરા નહીં ડાલતે. હાં બુમ્લા નામી એક નર્મ મછલી આતી હૈં ઊસ મેં દેખા હૈં મઝકૂરા મસાલે કે ઈલાવા ટમાટર ભી ડાલતે હૈં. અગર મસાલા યા શોરબા ઝિયાદા કરના હો તો પિસા હુવા લહ્સન ઓર ખુશક ધનિયા દુગની તિગની બલ્કે ઈસ સે ભી ઝિયાદા મિકદાર મેં દિલ ખોલ કર ડાલ સકતે હૈં. કભી તજરિબા કર કે દેખ લીજિયે, હો સકતા હૈં શુરૂઆત મેં સહીહ ન બન પાએ, જબ હાથ બૈઠ જાએગા તો શાયદ આપ કો ઈસ તરીકે કા મછલી કા સાલન બહુત પસન્દ આએગા.

સરકારે મદીના صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ને મછલી ખાઈ

સુવાલ : કયા સુલ્તાને મદીના صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰલِہٖ وَسَلَّم સે મછલી ખાના સાબિત હૈં ?

જવાબ : જી હાં.

કદ-આવર મછલી

હઝરતે સચ્ચિદુના જાબિર બિન અબ્દુલ્લાહ رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ફરમાતે હૈં, રસૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ને હમેં કુફરકારે કુરૈશ કે મુકાબલે પર ભેજા ઓર હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ ઉબૈદા رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ કો હમારા સિપહ સાલાર (યા'ની કમાન્ડર) મુકરર ફરમાયા ઓર હમેં ખજૂરો કી એક બોરી બતૌરે ઝાદે રાહ ઈનાયત ફરમાઈ. ઈસ કે સિવા કોઈ

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुझ पर दस भरतभा सुबह और दस भरतभा शाम दुरुदे पाक पढा।
 उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (म.श.ह.)

और यीज़ नहीं थी जो हमें देते, हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमें (रोज़ाना) अक अक भज़ूर अता फ़रमाते. कहा गया :
 आप हज़रात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ अक भज़ूर से कैसे गुज़ारा करते थे ? फ़रमाया :
 हम उस को बख्ये की तरह यूसते और ठीपर से पानी पी लेते तो वोह
 उस रोज़ रात तक हमें काफ़ी हो जाती. हम अपनी लाठियों से दरपत के
 पत्ते गिराते और उन्हें पानी में तिमिगो कर आ लेते. इस के आ'द हम
 साखिले समुन्दर पर पड़ोये तो वहां बडे टीले के मानिन्द अक बहुत
 बडी मछली पडी थी, जिसे अम्बर कहा जाता है, हज़रते सय्यिदुना
 अबू उबैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : येह मुदर है, फिर फ़ुद डी
 फ़रमाया : नहीं बल्के हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के त्मेजे हुअे
 हैं और हम राडे फ़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में (घरों से निकले) हैं और आप हज़रात
 इजतिरारी हालत में हैं इस लिये (इसे) आ लीजिये. हम ने अक
 महीना उस पर गुज़ारा किया और हम 300 (आदमी) थे हत्ता के हम
 इर्बेह (या'नी तगडे) हो गअे. मुजे याद है के हम उस की आंभ के गढे से
 मटके त्भर त्भर कर यरबी निकालते और उस (मछली) से बैल जितने
 बडे बडे टुकडे काटते. (उस मछली की आंभ का हल्का इतना बडा था के)
 हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हम में से तेरह आदमियों
 को उस की आंभ के गढे में बिठा दिया (तो सब समा गअे). उस की अक
 पसली (कमान की तरह) पडी की फिर अक बडे ठांट पर कज़ावा कसा और
 वोह उस (पसली की कमान) के नीचे से गुज़र गया और हम ने उस
 के फ़ुशक गोशत के टुकडे बतौरे जादे राह साथ रख लिये. जब हम
 मदीनतुल मुनव्वरह رَزَاةَ اللهِ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا पड़ोये तो मुस्तफ़ा जाने रहमत

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीफ़ न पड़ा उस ने जफ़ा की. (عبارتان)

पिढमते बा ७-२-कत में छाज़िर हुअे और इस का जिक्र किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : वो छरिज़्क था ज़े अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास उस गोशत में से कुछ है ? (अगर हो तो) छमें ल्मी षिलाओ. छम ने छुज़ूर रिसालत मआ७ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जना७ में उस मछली का गोशत लेज तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने तनावुल फ़रमाया.

(مسلم ص १०७० حديث १९३० مُلَخَّصًا)

अल्लाहु रब्बुल छज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके छमारी ले छिसा७ मग़्फ़िरत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ओक घश्काल और उस का जवा७

सुवाल : इस छदीसे पाक में ज़े ये छ आया के छज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पहले तो उस मछली को मुदरि कछा फिर छालते छज़तिरार करार दे कर तनावुल ल्मी फ़रमाया, यछां तक तो मस्अला वाजे छ है और इस की गुन्जर्श ल्मी है लेकिन छदीसे मु७ा-२का में आगे यल कर ये छ ल्मी है के रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाछे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ल्मी उस मछली से कुछ तनावुल फ़रमाया छालांके सरकारे वाला त७ार त७ार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तो छालते छज़तिरार में नछीं थे इस का क्या जवा७ छोगा ?

जवा७ : जवा७न दारुल छफ़्ता अछले सुन्नत के ओक मुफ़्ती साछि७ की

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े ज़ुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। (क़ुरआन)

तलकीक यन्द् अल्फ़ाज़ के रदो बदल के साथ पेश की जाती है :
 मछली औसा जानवर है जिस के जल्द की हाजत नहीं होती।
 हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को उस के हलाल
 होने का एल्म नहीं था या फिर येह के मिलने वाली मछली
 औसी थी जो समुन्दर के कनारे पडी हुई मिली थी, उसे बा
 काईदा शिकार नहीं किया गया था एस बिना पर मजीद
 शुक्क पैदा हुओ और उन्हों ने उस मछली को मुद्दर करार
 दिया मगर फिर अपने एजतिहाद से डालते एजतिरार की
 बिना पर उसे खाने का हुक्म दिया लेकिन उन का मछली को
 मुद्दर गुमान करना (एजतिहादी ખता थी) एसी बिना पर
 सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने डालते एजतिरार
 न होते हुओ त्मी उसे तनावुल फ़रमाया. शारिहीने हदीस ने
 सरवरे काअेनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ से उस मछली
 के खाने जाने के सिद्धिसे में मुप्तलिफ़ निकात एशर्राह फ़रमाओ
 हूँ म-सलन येह गैबी रिज़्क और ब-र-कत वाला गोशत था
 एस लिये मडबूबे रब, ताजदारे अरब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ने उसे तलब फ़रमा कर तनावुल फ़रमाया, وَخَيْرُ ذِكِّكَ, एस चुक्ते
 के साथ साथ ऐन मुम्किन है के हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (की एजतिहादी ખता दूर करने) के लिये गैबदान
 आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अतौरे ख़ास उस मछली का
 गोशत तनावुल फ़रमाया ताके उन को और दीगर हज़रात को
 उस के हलाल होने का एल्म हो जाओ.

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (પૃષ્ઠ ૧૧)

હાલતે ઇઝતિરાર કયા હૈ ?

સુવાલ : ઇસ સુવાલ જવાબ મેં “હાલતે ઇઝતિરાર” કા તઝકિરા કિયા ગયા હૈ. બરાહે કરમ ! ઇસ કી કુછ વઝાહત કર દીજિયે.

જવાબ : હાલતે ઇઝતિરાર કી તફ્સીલ “તફ્સીરે ખઝાઈનુલ ઈરફાન” સફ્હા 56 સે મુલા-હઝા હો : મુઝ્તર વોહ હૈ જો હરામ ચીઝ કે ખાને પર મજબૂર હો ઓર ઉસ કો ન ખાને સે ખૌફે જાન (યા’ની જાન ચલી જાને કા ખૌફ) હો ખ્વાહ તો શિદત કી ભૂક યા નાદારી કી વજહ સે જાન પર બન જાએ ઓર કોઈ હલાલ ચીઝ હાથ ન આએ યા કોઈ શખ્સ હરામ કે ખાને પર જબ્ર કરતા હો ઓર ઇસ સે જાન કા અન્દેશા હો એસી હાલત મેં જાન બચાને કે લિયે હરામ ચીઝ કા કદરે ઝરૂરત યા’ની ઇતના ખા લેના જાઈઝ હૈ કે ખૌફે હલાકત ન રહે. (બલ્કે ઇતના ખાના ફર્ઝ હૈ)

અમીનુલ ઉમ્મહ

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ કે જઝબે ઓર વલ્વલે કે કુરબાન ! એસી તંગી ઓર ઉસરત, કે રોઝાના સિફ્ એક ખજૂર ઓર દરખ્તોં કે પત્તે ખા કર ભી રાહે ખુદા عَزَّوَجَلَّ મેં દુશ્મનોં સે લડતે ઓર અપની જાનેં કુરબાન કરતે થે. યેહ ઉન્હીં કી કુરબાનિયોં કા સદકા હૈ જો આજ દુન્યા મેં હર તરફ દીને ઇસ્લામ કી બહારેં હેં, સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ને રાહે ખુદા કે હર સફર મેં બઢ ચઢ કર હિસ્સા લિયા ખ્વાહ વોહ દુશ્મનોં કે મુકાબલે મેં કિતાલ (યા’ની જંગ) કા મુઆ-મલા હો યા ઇલ્મે દીન સીખના ઓર સિખાના મક્સૂદ

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم اُ
پہنچتا ہے۔ (برقن)

હો. ઈસ્મે દીન સીખને સિખાને કે લિયે હમે ભી રાહે ખુદા મેં સફર કા ઝેહુન બનાના ચાહિયે ઔર દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની કાફિલોં મેં સુન્નતોં ભરા સફર કર કે અપની ઔર સારી દુન્યા કે લોગોં કી ઈસ્લાહ કી કોશિશ કરની ચાહિયે. અભી જો હિકાયત આપ ને મુલા-હઝા ફરમાઈ ઈસ મુહિમ કા નામ “સીફુલ બહર” હૈ, તીન સો જાંબાઝોં કી ફૌજ કે સિપહ સાલાર હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ ઉબૈદા બિન જરહલ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
“અ-શ-રએ મુબશ્શરહ” સે થે. બારગાહે રિસાલત وَاللَّهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
સે ઈન કો “અમીનુલ ઉમ્મહ” (યા'ની ઉમ્મત કા અમાનત દાર) કા પ્યારા લકબ ઈનાયત હુવા થા. ઈબ્તિદાએ ઈસ્લામ મેં હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ બક સિદીક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી ઈન્દિરાદી કોશિશ કે નતીજે મેં મુસલ્માન હુએ થે. નિહાયત હી દિલેર, શેરદિલ, બુલન્દ કામત થે ઔર ચેહરએ મુબા-રકા પર ગોશત કમ થા, ગઝવએ ઉહુદ કે મૌકઅ પર મદીને કે તાજદાર, શહન્શાહે અબરાર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે રુખ્સારે પુર અન્વાર મેં લોહે કે ખૌદ કી દો કરિયાં પૈવસ્ત હો ગઈ થીં, ઉન્હોં ને અપને દાંતોં સે ઉન કો ખીંચ કર નિકાલા ઈસ વજહ સે આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે દો અગલે દાંત શહીદ હો ગએ થે.
(الاصابة 3 ص 147-146)

અલ્લાહ રબબુલ ઈઝતt عَزَّوَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો ઔર ઉન કે સદકે હમારી બે હિસાબ મગિરત હો.
أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ગઝવએ સીફુલ બહર કે મૌકઅ પર કદ-આવર મછલી કા મિલ જાના, એક માહ તક સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان કા ઉસ કો તનાવુલ ફરમાના, ઊંટોં પર લાદ કર સાથ લાના,

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِس نے مُؤْمِن پر دَس مَرَتَبَا دُرُودِ پَاک پढَا اَللّٰہُ عَلَّوَجَلَّ اِس پر سَو
رَحْمَتَے نَاجِلِ فَرِمَاتَا هے. (برق)

મદીનતુલ મુન્વરહ શરફًا وَتَعْظِيمًا بِمِی સાથ લે આના, મઇલી કે ગોશત કે ઝાએકે મેં તગય્યુર ન આના¹ યેહ સબ અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત રَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ જરહ બિન જરહિહ ઓર સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ કી બ-ર-કતેં થીં. રાહે ખુદા عَزَّ وَجَلَّ મેં જો ભી સફર કરતા હે, ઓસ પર અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી ખૂબ રહમતેં નાઝિલ હોતીં, મુસીબતોં મેં ભી અ-ઝ-મતેં મિલતીં ઓર રન્જો આલામ રાહતોં મેં ઢલ જાતે હેં. હર મુસલ્માન કો સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ કી ઈન અઝીમ કુરબાનિયોં સે દર્સ હાસિલ કરતે હુએ ખિદમતે ઈસ્લામ કે લિયે કમર બસ્તા રહના ચાહિયે.

દિલ કા મરીઝ ઠીક હો ગયા

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક, દા'વતે ઈસ્લામી કે હર ફર્દ કા યેહ “મ-દની મક્સદ” હે : “મુઝે અપની ઓર સારી દુન્યા કે લોગોં કી ઈસ્લાહ કી કોશિશ કરની હે. ” اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ. ઈસ મ-દની મક્સદ કે હુસૂલ કે લિયે આશિકાને રસૂલ કે મ-દની કાફિલે સુન્નતોં કી તરબિયત કે લિયે શહર બ શહર ઓર ગાઉ બ ગાઉ સફર કરતે રહતે હેં, હર મુસલ્માન કો મ-દની કાફિલે કા મુસાફિર બન કર ઈસ કી બ-ર-કતેં લૂટની ચાહિએં. રાહે ખુદા عَزَّ وَجَلَّ મેં સફર પર નિકલે હુએ મુકદ્દસ અફરાદ કી કદ-આવર મઇલી કે ઝરીએ ગૈબી ઈમદાદ કી હિકાયત આપ ને અભી મુલા-હઝા ફરમાઈ. أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ આજ ભી જો ઈખ્લાસ કે સાથ ઈસ્લામ કી ખિદમત કી તડપ લે કર ઘરોં સે નિકલતે હેં વોહ મહરૂમ નહીં રહતે. ઈસ ઝિમ્ન મેં

﴿ڪرمانه مستڪفاه صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (अबु डीर)।

दा'वते ईस्लामी के म-दनी काङ्किले की अेक म-दनी बहार मुला-हजा इरमाईये : बाबुल मदीना कराची के अेक ईस्लामी भाई को हिल की तकलीफ़ हुई, डोकटर ने बताया के आप के हिल की दो नालियां बन्द हैं, अेन्जियो ग्राफी (ANGIOGRAPHY) करवा लीजिये. ठलाज पर हजारहा रुपै का अर्य आता था, येह बेयारे गरीब बबराअे हुअे थे, अेक ईस्लामी भाई ने उन पर ईन्किरादी कोशिश करते हुअे दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के "म-दनी काङ्किले" में सइर कर के वहां हुआ मांगने की तरगीब हिलाई, युनान्हे वोह तीन दिन के लिये म-दनी काङ्किले के मुसाफिर बने, वापसी पर तबीअत बेहतर पाई. जब टेस्ट करवाअे तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डोकटर हैरत से उहल पडा और कहने लगा के तुम्हारे हिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं. आभिर येह कैसे हुआ ? जवाब हिया : **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْكَ** दा'वते ईस्लामी के म-दनी काङ्किले में सइर कर के हुआ करने की ब-र-कत से मुजे हिल के भोडलिक भरज से नजात मिल गई है.

बूटने रडमतें काङ्किले में यलो सीपने सुन्नतें काङ्किले में यलो
हिल में गर हई हो डर से रुप जई हो पाओगे इरडतें काङ्किले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

समुन्दर की इँकी हुई मछली पाना कैसा ?

सुवाल : समुन्दर जिन मछलियों को पानी से बाहर इँक दे और वोह पानी के न होने की बिना पर भर जअें तो क्या वोह डलाल हैं ?

जवाब : जवाबन दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत के अेक मुफ़्ती साहिब की

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पडे. (हाम)

तलकीक यन्द अल्काज के रदो बदल के साथ पेश की जाती है :
 जो हां ऐसी मछलियां हलाल हैं और अत्नी बयान कर्दा
 हदीसे अम्बर इस की वाजेह दलील है, हु-कहाअे किराम
 رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने येह मस्अला तइसील के साथ कुतुबे किंकह में
 तलरीर इरमाया है. हजरते सय्यिदुना ज़ाबिर बिन
 अब्दुल्हाड رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के मडबूबे रब्बुल
 ईबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ईशादि रहमत बुन्याद है :
 “समुन्दर जिस मछली को केंक दे या (मछली के कनारे के करीब पलोंयने
 पर) पानी पीछे हट गया (और वोह मछली षुशकी में आने के सबब
 मर गई) तो ऐसी मछली को भाओ और जो (बिला सबब) पानी में
 मर कर उलटी तैर गई वोह न भाओ.”

(ابوداؤد ج ٢ ص ٥٠٢ حديث ٣٨١)

“मब्सूत” में है : हमारे नजदीक मछली के बारे में अस्ल
 ईबाहत है (या’नी मुबाह होना. इस मकाम पर मुबाह से मुराद
 वोह जानदार है जिस के हलाल होने के लिये जल की हाजत नहीं
 लिहाजा) अगर वोह किसी सबब के जरीअे से मर गई तो
 हलाल है और बिगैर सबब के या’नी षुद ब षुद मरी तो
 नहीं भाई जाओगी और अगर किसी परिन्दे ने उसे मार दिया
 तब त्नी भाई जाओगी अगर्ये वोह परिन्दा उसे उठा कर पानी
 में डाल दे और वोह मर जाओ, यूँही अगर वोह किसी जाल में
 इंस जाओ और उस से न निकल पाओ और मर जाओ तब त्नी
 भाई जाओगी, अगर कोई ऐसी चीज पानी में डाली जिस के

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (कोब्राल)

ખાને સે મછલી મર ગઈ ઔર પતા હો કે ઈસ કે ખાને સે મરી હૈ તો ખાઈ જાએગી, યૂંહી પાની કે પીછે હટ જાને કી વજહ સે હલાક હુઈ તબ ભી ખાઈ જાએગી, ઈસી તરહ પાની કી લહર ને ઉસે બાહર ફેંક દિયા ઔર વોહ મર ગઈ તબ ભી ખાઈ જાએગી.

(الْمَبْسُوطُ لِلسَّرْحَسِيِّ ج ١١ ص ٢٧٧)

કયા ઝમીન મછલી કી પીઠ પર હૈ ?

સુવાલ : કહા જાતા હૈ કે ઝમીન એક બહુત બડી મછલી કી પીઠ પર હૈ ઔર પહાડોં કે વુજૂદ કા સબબ ભી યેહી મછલી બની હૈ !

જવાબ : જી હાં, ઈસ કે મુ-તઅલ્લિક રિવાયાત મૌજૂદ હૈં યુનાન્યે ફતાવા ર-ઝવિયા જિલ્દ 27 સફહા 95 પર દર્જ એક હદીસે પાક કા તરજમા કુછ યૂં હૈ : હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબને અબ્બાસ તરજમા કુછ યૂં હૈ : હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબને અબ્બાસ અલ્લાહુ અલ્લેમુ જાલિલુન નહીં : અલ્લાહ જલ્ જલ્ ને ઈન મખ્લૂકાત મેં સબ સે પહલે કલમ પૈદા ક્રિયા, ઉસ સે કહા : “લિખો !” ઉસ ને અર્ઝ કી : કયા લિખૂં ? ઈશાદિ હુવા : કદ્ર (યા’ની તક્દીર) કો લિખો, યુનાન્યે ઉસ કલમ ને વોહ સબ કુછ લિખા જો ક્રિયામત તક હોને વાલા થા, ફિર ઉસ ક્રિતાબ કો લપેટ દિયા ગયા ઔર કલમ કો ઉઠા લિયા ગયા. અર્શે ઈલાહી પાની પર થા, પાની કે બુખારાત (અબ્બરહ કી જમ્મ. અબ્બરહ યા’ની ભાપ) ઉઠે, ઉન સે આસ્માન જુદા જુદા બનાએ ગએ ફિર મૌલા જલ્ જલ્ ને મછલી પૈદા કી, ઉસ પર ઝમીન બિછાઈ, ઝમીન પુશ્તે માહી (યા’ની મછલી કી પીઠ) પર હૈ, મછલી તડપી, ઝમીન ઝોકે લેને લગી તો ઉસ પર પહાડ જમા કર બોઝલ કર દી ગઈ.

(تفسير دُرِّمَنْشُور ج ٨ ص ٢٤٠)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुव्द शरीफ़ पढो अद्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अन सूर)

सब से पहले नूरे मुस्तफ़ा पैदा हुवा या कलम ?

सुवाल : बयान कर्दा रिवायत में सब से पहले कलम की पैदाईश का तज़क़िरा है जब के येह भी रिवायात हैं के सब से पहले नूरे मुस्तफ़ा पैदा किया गया है, दोनों में तत्बीक (मुवा-इकत) कैसे हो ?

जवाब : सहीह उदीस में है के रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम عَزَّ وَجَلَّ وَجَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ईशदि नूरबार है : “अद्लाह ने तमाम चीज़ों से पहले मेरे नूर को पैदा इरमाया. उस वक्त न लौह थी न कलम, न जन्मत, न दोज्भ न इरिशते थे, न आस्मान, न जमीन, न सूरज न याँद, न जिनन न ईन्सान थे, इर जब रब عَزَّ وَجَلَّ ने और मज्लूक को पैदा करना याहा तो उस नूर के यार हिस्से किये, अक हिस्से से कलम दूसरे से लौहे महकूज़ तीसरे से अर्श वगैरा पैदा इरमाया.”

(अल्मोहबि ज १ व ३६, कुशफ़ खफ़ाह ज १ व २३७, مدارिजु न्नीबो ज २ व २ मूख़्सा) जिन जिन चीज़ों की निस्बत रिवायात में अव्वलिय्यत का हुक़म आया है उन अश्या का नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बा'द में होना ईस उदीस से साबित है. मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुइती अहमद यार पानु अल्लुहनु ने उदीसे पाक के ईस हिस्से “रब ने जो चीज़ पहले पैदा की वोह कलम था” के तइत इरमाते हैं : येह अव्वलिय्यत ईजाफ़ी है या'नी अर्श, पानी, हुवा और लौहे महकूज़ की पैदाईश के बा'द जो चीज़ सब से पहले पैदा हुई वोह कलम है. “भिरकात” में

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર કસરત સે દુરુદે પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મઙ્ગિરત હૈ. (ખાતમ)

ઈસ જગહ હૈ કે સબ સે પહલે નૂરે મુહમ્મદી (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) પૈદા હુવા, વહાં અવ્વલિય્યતે હકીકિયા મુરાદ હૈ. (મિરઆતુલ મનાજ્જહ, જિ. 1, સ. 103) ઈમામ કસ્તલાની ફરમાતે હૈં : કલમ કી અવ્વલિય્યત નૂરે મુહમ્મદી (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) પાની ઓર અર્શ કે ઈલાવા (મખ્લૂકાત) કી નિસ્બત સે હૈ. યેહ ભી કહા ગયા હૈ કે હર એક કી અવ્વલિય્યત ઉસ કી જિન્સ (યા'ની કિસ્મ) કી તરફ ઈજાફત કે એ'તિબાર સે હૈ યા'ની અન્વાર મેં સે સબ સે પહલે અલ્લાહ جَلَّ وَعَزَّ ને મેરે નૂર (નૂરે મુહમ્મદી) કો પૈદા ફરમાયા, ઈસી તરહ દૂસરી અશ્યા ભી પૈદા હોને કે લિહાઝ સે અપની અપની જિન્સ (યા'ની કિસ્મ) મેં પહલી હૈં. (آلْمَوَاهِب ج ١ ص ٣٨)

કલમ કે બારે મેં વઝાહત

સુવાલ : આપ કે જવાબ મેં બયાન કી ગઈ રિવાયત મેં કલમ કા ઝિક હૈ, કલમ કે બારે મેં વઝાહત દરકાર હૈ.

જવાબ : જવાબન દારુલ ઈફતા અહલે સુન્નાત કે એક મુફતી સાહિબ કી તહકીક ચન્દ અલ્ફાઝ કે રદ્દો બદલ કે સાથ પેશ કી જાતી હૈ : કુરઆને કરીમ કે પારહ 29 મેં સૂ-રતુલ કલમ હૈ, ઉસ કી ઈબ્તિદાઈ આયત : “تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَاسْتَضِئْ بِنُورِهِ” કે તહ્ત “તફસીરે ખઝાઈનુલ ઈરફાન” મેં હૈ : “અલ્લાહ તઆલા ને કલમ કી કસમ ઝિક ફરમાઈ ઈસ કલમ સે મુરાદ યા તો લિખને વાલોં કે કલમ હૈં જિન સે દીની દુન્યવી મસાલેહ વ ફવાઈદ વાબસ્તા હૈં ઓર યા ક-લમે આ'લા મુરાદ હૈ જો નૂરી

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: جَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ઉસ કે લિયે એક કીરાત અજા લિખતા હૈ ઓર કીરાત ઉલુદ પહાડ જિતના હૈ. (મુબારક)

કલમ હૈ ઓર ઈસ કા તૂલ ફાસિલએ ઝમીન વ આસ્માન કે બરાબર હૈ, ઈસ ને બ હુકમે ઈલાહી લૌહે મહફૂઝ પર ક્રિયામત તક હોને વાલે તમામ ઉમૂર લિખ દિયે.”

(બજાઈનુલ ઈરફાન, સ. 1044)

મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَائِنَان મિરઆત શહે મિશકાત મેં ફરમાતે હૈં : “કલમ ને લૌહે મહફૂઝ પર બ હુકમે ઈલાહી વાકિઆતે આલમ અ-ઝલી સે અબદ તક ઝર્રા ઝર્રા, કતરા કતરા લિખ દિયા. ખયાલ રહે કે યેહ તહરીર ઈસ લિયે ન થી કે રબ કો ભૂલ જાને કા ખતરા થા બલ્કે ઈસ કા મન્શા ફિરિશતોં ઓર બા’ઝ મહબૂબ ઈન્સાનોં કો ઈસ પર મુત્તલઅ કરના થા [۳۵۷۱۰۱۰۱۰۱۰] મઝીદ ફરમાતે હૈં : પાની આસ્માન વ ઝમીન વગૈરા સે પહલે પૈદા હુવા, અર્શ કે પાની પર હોને કા યેહ મતલબ હૈ કે ઈન દોનોં કે બીચ મેં કોઈ આડ ન થી ન યેહ કે પાની પર રખા હુવા થા વરના અર્શ તમામ અજસામ સે બહુત બડા હૈ.” [۹۵۱۰۱۰] (મિરઆતુલ મનાજ્જહ, જિ. 1, સ. 90, 91)

જન્નત કી સબ સે પહલી ગિઝા

સુવાલ : જન્નત કી સબ સે પહલી ગિઝા ક્યા હોગી ?

જવાબ : બુખારી શરીફ મેં વારિદ એક ફરમાને મુસ્તફા

ﷺ કા હિસ્સા હૈ : “પહલા વોહ ખાના જિસે જન્નતી ખાએંગે વોહ મઘલી કી કલેજી કા કનારા હૈ.”

(بخاری ج ۲ ص ۶۰۰ حدیث ۳۹۳۸)

હઝરતે અલ્લામા અલી કારી

ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત લિખતે હૈં : બા’ઝ

فرمانے میں فرماتا ہے: عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ: جِس نے کیتا ہے میں میں پر دھڑکے پاک لیا تو جب تک میرا نام اس میں
 رہے گا کفر میں اس کے لیے افسوس کرتے رہیں گے۔ (بخاری)

उत्तरात ने इरमाया के “येह वोह मछली है के जिस पर
 जमीन ठहरी हुई है.” उस की कलेश का मजेदार कनारा
 पिलाया जायेगा, जो सब से जियादा लजीज होता है.

(مرقاة ج ۱۰ ص ۱۸۹ تحت الحديث ۵۸۷۰)

मछली बोल नहीं सकती इस की अजुबो गरीब हिकमत

सुवाल : सारे जानवर बोलते हैं मगर मछली नहीं बोलती इस में क्या
 हिकमत है ?

जवाब : इस की हिकमत रबुल अजुब ही जानता है. “मुका-श-इतुल
 कुलुब” में इस की येह अजुबो गरीब हिकमत लिखी है :
 “अद्लाह तआला ने तमाम जानवरों को जमान से मुशरफ़
 इरमाया है मगर मछली को महज़म किया गया है. इस
 का सबब येह है के सय्यिदुना आदम सफ़ियुद्लाह
 عَلِيٌّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ को सजदा करने से इन्कार की वजह से
 जब शैताने लईन की शकल बिगाड कर जमीन पर ईंक दिया
 गया तो इस ने समुन्दर का रुष किया, इसे सब से पहले
 मछली नजर आई, शैतान ने सय्यिदुना आदम सफ़ियुद्लाह
 عَلِيٌّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ की पैदाईश का वाकिआ सुनाते हुअे
 येह भी कडा के वोह फुशकी और पानी के जानवरों का शिकार
 करेंगे. मछली ने तमाम दरियाई जानवरों में येह बात ईला
 दी इस वजह से इसे बोलने की सलाहियत से महज़म कर
 दिया गया.”

(مكاشفة القلوب ص ۷۱)

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर ओक बार दुरुदे पाक पढा अदलाद उस पर दस रउमते बेजता है. (५)

मछली के तिब्बी इवायद कौन सी मछली क्रियादा मुझीद है ?

सुवाल : कौन सी मछली उम्दा होती है ? मछली के मजीद कुछ तिब्बी इवायद भी बता दीजिये.

जवाब : अदलामा दमीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फरमाते हैं : सब से उम्दा मछली समुन्दर की वोड छोटी मछली होती है जिस की पीठ पर नकश होते हैं, इस के पाने से बदन में ताजगी आती है. मछली पाने से उभूमन प्यास क्रियादा लगती है, बलगम में ँजाड़ा होता है हां गर्भ मिजाज वालों और नौ जवानों के लिये मछली पाना मुझीद है. अगर शराबी, मछली सूंघ ले तो उस का नशा उतर जाये और वोड डोश में आ जाये. डकीम ँबने सीना का कौल है : अगर मछली शङ्क के डमराड भाई जाये तो नुजूलुल माअ ("भोतिया बिन्द" या'नी आंभ में पानी उतर आने का मरज जिस से बीनाई जाती रहती है) के मरज में झायेदा होता है नीज इस से नजर भी तेज होती है. (حَيَاةَ الْحَيَوَان ٢٤ ص ٤٤, ٤٣) ओक तिब्बी तडकीक के मुताबिक सर्दी से डोने वाली प्वांसी का मछली से बेडतर कोई ँलाज नहीं.

क्या मछली बिडकुल न पाना मुजिरे सिद्धत है ?

सुवाल : मछली बिडकुल डी न पाना कहीं मुजिरे सिद्धत तो नहीं ?

जवाब : पैर यकीनी तौर पर तो कुछ नहीं कडा जा सकता अलबत्ता भाडिरीन के तअस्सुरात के मुताबिक मछली ँन्सानी सिद्धत के लिये निडायत अडम गिजा है, इस में बा'ज औसे अजजा

﴿رَبِّهِمْ يُسَلِّمُ﴾ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

होते हैं जो किसी और गोशत में नहीं पाये जाते, मिसाल के तौर इस में आयोडीन (IODINE) होता है जो के सिद्धत के लिये निहायत अहम्मियत का हामिल है इस की कमी से जिस्म के गुद्दही निजाम का तवाजुन बिगड सकता है, गले के अहम गुद्द थाईरोईड (Thyroid) में सुकम (या'नी जामी) पैदा हो कर जिस्मानी निजाम में अहुत सी भराबियां पैदा हो सकती हैं. वोह ममालिक जहां समुन्दरी गिजा का इस्ति'माल कम किया जाता है वहां के आशिन्दे आम तौर पर इन बीमारियों का शिकार रहते हैं. मछली अतौर गिजा इस्ति'माल करने वालों की उम्में लम्बी होती है, यहां तक के वोह मरीज भी इस के इवाइद से मइरूम नहीं रहते जो आबिरी द-रजे के आरिजमे कलब (या'नी दिल की बीमारी) में मुतला होते हैं.

हइते में दो बार तो मछली जा लेनी याहिये

सुवाल : मछली रोजाना ही जाई जाये या कभी कभी ?

जवाब : आप की सवाल दीद पर है. माहिरीन का कहना है : हइते में कम अज कम दो बार तो जरूर मछली जा लेनी याहिये, इस तरह दिल की बीमारी से तहइकुज हसिल हो सकता है, ओक इत्तिलाअ के मुताबिक "वेल्ज" में जैसे 2000 मरीजों पर तजरिबा किया गया जिन पर पहली बार दिल के मरज का हम्ला (HEART ATTACK) हुवा था. उन में से जिन्हें हइते में दो बार मछली जाने का मशवरा दिया गया था उन पर

करमाने मुस्तफ़اً. حَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुइ पाक न पढा तलकीक वोह बढे भुप्त हो गया. (उंउः)

आयिन्दा दो साल तक आरिजमे कलम का कोई लम्बा नहीं हुआ जब के उन ही मरीजों में से जिन्हें मछली खाने का नहीं कहा गया, उन्हें अगले दो साल के अन्दर आरिजमे कलम (या'नी दिल के मरज) में दोबारा मुप्तला होते देखा गया. एक अमरीकी तिब्बी जरीदे में शाअेअ होने वाली रपोर्ट के मुताबिक गिजा में मछली का काँछे ईस्ति'माल मसाने के केन्सर की अइजाईश (या'नी बढोतरी) कम करने की लरपूर सलाहिय्यत रभता है. तिब्बी माहिरीन के मुताबिक मछली का भा काँछा ईस्ति'माल मसाने के केन्सर को बढने से 50 ईसद तक रोक सकता है जिस के बाईस ईस मरज की वजह से होने वाली ललाकतों में भी कभी वाकेअ हो सकती है.

सुवाल : मछली खाने के भा'द दूध पीना कैसा ?

जवाब : अतिब्बा के मुताबिक मछली खाने के भा'द दूध पीने से सईद दाग होने का अन्देशा है.

मछली के तेल के इवाएद

सुवाल : क्या मछली का तेल भी होता है ? अगर हां तो ईस के भी कुछ इअदे अता दीजिये.

जवाब : मछली का तेल दर अस्ल उस के जिगर का तेल होता है, ईसे (COD LIVER OIL) कहते हैं, ईस का एक यम्मय पीना गठिया या'नी जोड़ों के दर्द के लिये मुईद है. एक डॉक्टर का कहना है के जिस तरह मछली खाना मुईद है ईसी तरह से मछली का तेल भी अगर लम्बे अर्से तक ईस्ति'माल किया

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ وَ اللَّهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दूड़के पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकभते भेजता है. (५)

જાએ તો ફાએદે સે ખાલી નહીં. ઈસ કે ઈસ્તિ'માલ સે ખૂન કી નાલિયોં મેં પૈદા હોને વાલી ઈબ્તિદાઈ રુકાવટોં જિન સે શિરયાનોં (યા'ની દિલ કી છોટી રગોં) કી સખ્તી કી વજહ સે આરિઝએ કલ્બ (યા'ની દિલ કી બીમારી) કા અન્દેશા હોતા હૈ, સે તહફફુઝ મિલ જાતા હૈ. દિલ કી બીમારી કા એક સબબ ખૂન મેં કોલેસ્ટ્રોલ (CHOLESTEROL) કા ઈઝાફા ભી હૈ. કોલેસ્ટ્રોલ ખૂન કી નાલિયોં કે રાસ્તે યા તો તંગ કર દેતા હૈ યા બિલ્કુલ હી બન્દ કર દેતા હૈ, ઈસ સે દિલ કી હ-ર-કત બન્દ હો કર મૌત વાકેઅ હો સકતી હૈ. મછલી કા તેલ ખૂન કી રગોં કી દીવારોં કો ગઢોં ઔર રુકાવટોં સે બચાતા હૈ ક્યૂંકે ઈન હી મકામાત પર કોલેસ્ટ્રોલ જમતા ઔર દૌરાને ખૂન કે લિયે રુકાવટ બનતા હૈ. (યેહ બાત હમેશા યાદ રખને વાલી હૈ કે સુને સુનાએ ઔર કિતાબોં મેં લિખે હુએ ઈલાજ મુઆ-લજે અપને તબીબ કે મશ્વરે કે બા'દ હી કરને ચાહિએં ક્યૂંકે હર એક કી તબઈ કેફિયત એક તરહ કી નહીં હોતી, બારહા એસા હોતા હૈ કે એક હી ચીઝ કિસી કે લિયે મુફીદ તો કિસી કે લિયે મુઝિર (યા'ની નુક્સાન દેહ) સાબિત હોતી હૈ)

મછલી કે સર કે ફવાઈદ

સુવાલ : ક્યા “મછલી કા સર” ખાને કે ભી ફવાઈદ હોં ?

જવાબ : ક્યૂં નહીં, યેહ ભી અલ્લાહુ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત ્ક્રી ઈનાયત કી હુઈ નિહાયત લઝ્ઝત વાલી ને'મત હૈ. મછલી કે સર મેં સે ઉમૂમન આંખેં નિકાલ કર ફેંક દી જાતી હોં હાલાં કે બડી મછલી કી આંખોં કે નીચે કી ચરબી ઈન્તિદાઈ લઝીઝ હોતી હૈ.

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ الْعِقَابُ : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

मछली के सर की यष्नी जिसे शोरबा या सूप (SOUP) भी कहते हैं. बीनाई की कमजोरी और दीगर कई अमराज के लिये झाअेदे मन्द है, भा काई-दगी से येह यष्नी पीने से आंभों के यश्मे उतर सकते हैं.

मछली के सर की यष्नी बनाने का तरीका

सुवाल : मछली के सर की यष्नी बनाने का तरीका बयान कर दीजिये.

जवाब : यष्नी बनाने का तरीका बहुत आसान है. मछली के सर के टुकडे टुकडे कर के दो तीन घन्टे पानी में भिगो कर रख दीजिये, इस के भा'द धो कर नअे पानी में डाल कर मअ भिर्य मसाला और हस्बे जइरत नमक यढा कर सूप बना लीजिये. हर तीन दिन भा'द सुब्ह नाश्ते से कब्ल अेक पियाली नीम गर्भ पीना आंभों के लिये निहायत मुझीद है. कहते हैं के अेक आदमी ने सिई तीन पियालियां पी थीं के उन की अैनक उतर गई ! मगर जइरी नहीं के हर अेक की अैनक इसी तरह जल्द उतर जाअे. अल्वाहु रब्बुल ईज्जत की रहमत पर नजर रखते हुअे ईस्तिकामत के साथ पीना याहिये.

मछली के सर की यष्नी कई अमराज के लिये मुझीद है

सुवाल : मछली के सर की यष्नी और कौन कौन सी बीमारियों में कारआमद है ?

जवाब : मछली के सर की यष्नी (सूप) झालिज, लक्वा, ईर्कुन्सिा (या'नी लंगडी का दई जो के चडे से ले कर पाउ के टप्ने तक पडॉयता है) आ'साबी कमजोरी, पड्डों की कमजोरी, कब्ल अज वक्त

इरमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَعَلِيمٌ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبر/زق)

बुढापा, जोड़ों का पुराना दर्द, जिस्मानी और आ'साबी पियाव और कुव्वते छाङ्गिआ बढाने के लिये निहायत मुफ़ीद है. जैसे लोग जो अपनी याद दाशत बिल्कुल प्पो युके हों या जिन् की याद दाशत अत्म होने के करीब हो वोह प्वाह जवान हों या बूढे येह यप्नी (सूप) ज़रूर 'इस्ति'माल करें. अगर गर्मी के मौसिम में ना मुवाफ़िक महसूस करें तो सर्दियों में 'इस्ति'माल करें. अगर आप को बयान कर्दा तमाम बीमारियों में से कोई भरज नहीं तब भी अगर कुछ अर्सा मछली के सर का सूप 'इस्ति'माल इरमाअेंगे तो ٱللّٰهُ اَكْبَرُ! इन बीमारियों से तहङ्कुज छ़ासिल होगा.

मछली और कुव्वते छाङ्गिआ

सुवाल : क्या मछली का 'इस्ति'माल कुव्वते छाङ्गिआ पर भी असर अन्दाज़ होता है ?

जवाब : ज़ हां. फुसूसन मछली का तेल और इलों का 'इस्ति'माल कुव्वते छाङ्गिआ के लिये मुफ़ीद है. माछिरीन की तहकीक के मुताबिक इलों, सञ्जियों और मछली में विटामिन सी और इलेवो नॉईड्ज़ (Flavonoids) पाअे जाते हैं जो जिस्म में सोजिश नहीं होने देते नीज़ इन में पाअे जाने वाले "ओमेगा 3" द्विमाग की बैङ्नी तह को सोजिश से बचाते हैं जिस की वजह से याद दाशत भी मु-तअस्सिर नहीं होती. माछिरीन ने 65 साल से जाईद उअ्र के 8085 मर्द व अवातीन को उन के पाने पीने की अश्या, तर्जे जिन्दगी, याद दाशत, गिआओं

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ : जो मुझे पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (कोशिश)

और सिद्धत के बारे में सुवाल नामे इराहम कर के 4 साल तक उन की तहकीक की जिस के दौरान मा'लूम हुवा के इल, सज़ियां और मछली का तेल ज़ियादा इस्ति'माल करने वालों की याद दाश्त दूसरों से बेहतर होती है. अक तबीअ का कडना है : इन्हि की रियासत "केराला" के अक साहिब ने बैरने मुल्क मुजे बताया के केराला के लोग रियाज़ी (जिस में हिसाब, अलजिब्रा और ज्योमेट्री वगैरा में शामिल होता है) साइन्स और दुन्या के दीगर मुश्किल तरिन उलूम में काफ़ी भा कमाल होते हैं. मैं ने इस कमाल की वजह पूछी तो कडने लगे : मछली और मछली के सर का इस्ति'माल.

केकडा हलाल है या हराम ?

सुवाल : केकडा हलाल है या हराम ?

जवाब : हराम है. मछली के सिवा दरिया का हर जानवर जाना हराम है.

मलिकुल उ-लमा इमाम अलाउद्दीन अबू अक बिन मस्दिद कासान्नी क़दिस सिरातुनुदरान इस बारे में इरमाते हैं : अद्लाहु रइमान
 عَزَّ وَجَلَّ का इरमाने आलीशान है :

وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبِيثَ तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और गन्दी
 (१०७: १५) थीजें इन पर हराम करेगा.

और मेंडक, केकडा और सांप वगैरा खबाइस (गन्दी थीजों) में से हैं. (بَدَائِعُ الصَّنَائِعِ ج ६ ص १६६) मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह

﴿يُرْسَلُ﴾) इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे विये तछरत है.

ईमाम अहमद रजा आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ इरमाते हैं :
 “सरतान (या'नी केकडा) आना हराम है.”

(इतावा र-अविय्या, जि. 24, स. 208)

जींगा आना कैसा ?

सुवाल : जींगा आना कैसा है ?

जवाब : जींगे के मछली होने में उ-लमा का इप्तिलाफ़ है, ईसी बिना पर ईस की हिल्लत व हुरमत (या'नी हलाल व हराम होने) में भी इप्तिलाफ़ है. जिन के नजदीक जींगा मछली की अक़साम में से है उन के नजदीक हलाल है और जिन के नजदीक मछली की अक़साम में से नहीं उन के नजदीक हराम है. मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ की तहकीक है के जींगा मछली ही की अेक क़िस्म है, युनान्हे इरमाते हैं : “हमारे (या'नी ह-नई) मजहब में मछली के सिवा तमाम दरियाई जानवर मुत्वकन हराम हैं तो जिन (अहले तहकीक رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَامُ) के अयाल में जींगा मछली की क़िस्म से नहीं उन के नजदीक हराम होना ही याहिये मगर इकीर (या'नी आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ने कुतुबे लुगत व कुतुबे तिब व कुतुबे इल्मे ह-यवान में बिल इत्तिफ़ाक तसरीह देपी के वोह मछली है.” जींगे के मछली होने पर कसीर जुज़्इय्यात नक़ल करने के आ'द आबिर में इरमाया : बहर हाल अैसे शुआ व इप्तिलाफ़ (जींगे में हैं विहाजा ईस के आने)

करमाने मुस्तफ़ा: عَمَلِيَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शम्स है. (تجريب)

से बे ज़रत बयना ही याहिये.

(इतावा २-अविध्या, जि. 20, स. 336 ता 339)

सदरुशरीअह, अदरुतरीकह उजरते अदलामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي "अहारे शरीअत" जिल्द 3 सफ़हा 325 पर इरमाते हैं: जीगे के मु-तअद्लिक इफ़्तिलाफ़ है के येह मछली है या नहीं इसी बिना पर इस की हिल्लत व हुरमत (या'नी हलाल व हलाम होने) में भी इफ़्तिलाफ़ है अ ज़ाहिर उस की सूरत मछली की सी नहीं मा'लूम होती अल्के अक किरम का कीडा मा'लूम होता है लिहाजा इस से बयना ही याहिये.

आ'ला हजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने कभी जीगा न भाया

आ'ला हजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं: الْحَمْدُ لِلَّهِ इस इकीर और इस के घर वालों ने उम्र भर (जीगा) न भाया और न इसे भाअेंगे. (इतावा २-अविध्या, जि. 20, स. 339) मुफ़्तिये आ'जम पाकिस्तान हजरते अदलामा मौलाना वकारुदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَيِّين की बिदमत में सगे मदीना غُफ़ी हाजिर था, अर सबीले तजक़िरा मुफ़ती साहब ने इरमाया: मैं जीगे नहीं आता, अक बार घर में पकाअे गअे थे मैं ने कह दिया के जीगे के सालन का यम्मय भी मेरे सालन में न डाला जाअे.

जीगा जाने से कोलेस्ट्रॉल में घटाफ़ा होता है

जीगा अगर जाना ही हो तो उस का छिलका उतार कर उस की पुशत को लम्बाई में इफ़्तिला से ले कर हुम तक अख़ी तरह खीर कर काली डोरी नुमा आलाइश निकाल दी जाअे. जीगे ज़ियादा न भाअे जाअें के इन में कोलेस्ट्रॉल की भिकदार ज़ियादा होती है.

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शब्द की नाक भाक आलूद छे जिस के पास मेरा ठिक छे और वोद मुज पर दुवेदे पाक न पड़े. (कर्म)

जींगा बिगैर सफ़ाई किये जाना

सुवाल : क्या काली डोरी निकाले बिगैर जींगा जाना गुनाह छै ?

जवाब : गुनाह तो नहीं अलबत्ता बेहतर येही छै के काली डोरी निकाल दी जाअे. इतावा र-जविय्या शरीफ़ में जींगे के हलाल छोने की बहस करते छुअे मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा जाना इरमाते छैं, “अन्वारुल असरार” में छै : “इबियान (या'नी जींगा) बहुत छोटी मछली सुर्ष रंग छोती छै.” आ'ला हजरत عَلَيْهِ السَّلَام आगे चल कर मजीद इरमाते छैं : “मे'राजुदिरायह” में साफ़ इरमाया के असी छोटी मछलियां जिन का पेट याक नहीं किया जाता और बे आलाइश निकाले तून लेते छैं ईमाम शाफ़ेई के सिवा सब अईम्मा के नजदीक हलाल छैं.

(इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 338)

छोटी मछलियां बिगैर आलाइश निकाले जाना

सुवाल : बहुत छोटी मछलियों के पेट की आलाइश निकालना दुश्वार छोता छै अगर बिगैर सफ़ाई किये जा लें तो कैसा ?

जवाब : जईज छै. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, बहारे शरीअत जिल्द 3 सफ़हा 325 पर छै : छोटी मछलियां बिगैर शिकम याक किये (या'नी पेट साफ़ किये बिगैर) तून ली गईं ईन का जाना हलाल छै.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: جِلْسِ نِي مُؤَلِّمٍ رُوِيَ جُمُوعًا دُو سُو بَارٍ دُو رُوَيْدِي پَاك پَدَا اُو سِ كِ دُو سُو سَالِ كِ گُونَاك مُؤَاك اُو گُو. (ترمذی)

મછલી કે ઝબ્હ ન કરને કી હિક્મત

સુવાલ : મછલી બિગૈર ઝબ્હ ખાઈ જાતી હૈ ઇસ મેં કયા હિક્મત હૈ ?

જવાબ : મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહમદ રઝા ખાન ફરમાતે હૈં : મછલી ઔર ટીરી (યા'ની ટિકી) મેં ખૂન હોતા હી નહીં કે ઇસ કે ઇખ્રાજ (યા'ની ખારિજ કરને) કી હાજત હો, ગૈર દ-મવી (યા'ની જિસ મેં ખૂન ન હો) જાનવરોં મેં હમારે યહાં સિફ યેહી દો હલાલ હૈં લિહાઝા સિફ યેહી બે ઝબ્હ ખાએ જાતે હૈં. શાફિઈયા વગૈરહુમ કે નઝદીક, કે ઔર દરિયાઈ જાનવર ભી કુલ યા બા'ઝ હલાલ હૈં વોહ ઉન્હેં ભી બે ઝબ્હ જાઈઝ જાનતે હૈં કે દરિયા કે કિસી જાનવર મેં ખૂન નહીં હોતા.

(ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 20, સ. 335)

મછલી કા ખૂન પાક હૈ યા નાપાક ?

સુવાલ : મછલી કા ખૂન પાક હૈ યા નાપાક ?

જવાબ : પાક ઔર નાપાક કા મસ્અલા તો ઉસ વક્ત ખડા હોગા જબ કે મછલી મેં ખૂન ભી હો, મછલી કે અન્દર તો ખૂન હી નહીં હોતા ! સિયાહી માઈલ સુર્ખ ગાઢા સા જો મવાદ નિકલતા હૈ વોહ ખૂન નહીં હૈ !

મછલી કા હર જુઝ પાક હૈ

સુવાલ : મછલી કી કૌન કૌન સી ચીઝેં નાપાક હોતી હૈં ?

જવાબ : મછલી મેં કોઈ ભી ચીઝ નાપાક નહીં.

સૂખી મછલી ખાના કેસા ?

સુવાલ : ખુશક મછલી હલાલ હૈ યા હરામ ?

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલલાહ عَلَّوْمُ عَلَّوْمُ عَلَّوْمُ عَلَّوْمُ પર રહમત ભેજેગા. (ابن عمری)

જવાબ : હલાલ છે અલબત્તા ઈસ મેં બદબૂ હોતી છે અબ બદબૂ કિસ નૌઈયત કી છે આયા આરિઝી (Temporary) છે યા દાઈમી (Long Lasting) ઈસી પર મુમા-ન-અત હોને ન હોને કા દારો મદાર છે. યાદ રહે ! જિસ આદમી કે મુંહ યા બદન સે બદબૂ આતી હો ઉસે મસ્જિદ મેં જાના હરામ ઓર જમાઅત મેં શામિલ હોના મમ્નૂઅ છે.

બાસી મછલી ખાના કેસા ?

સુવાલ : બાસી મછલી ખાના કેસા ?

જવાબ : અગર અભી સડી નહીં છે તો ખાને મેં હરજ નહીં અલબત્તા સડી હુઈ મછલી યા ગોશત નહીં ખા સકતે. દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 1548 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ફેઝાને સુન્નત” જિલ્દ 1 સફહા 327 પર છે : ગોશત સડ ગયા તો ઉસ કા ખાના હરામ છે. ખરાબ હોને કી અલામત યેહ છે કે ઉસ મેં ફફૂંદી, બદબૂ યા ખટ્ટી બૂ પૈદા હો જાતી છે. અગર શોરબા હો તો ઉસ પર ઝાગ ભી આ જાતા છે. દાલેં, ખિચડા ઓર ટમાટર યા ખટાઈ વાલા સાલન જલ્દ ખરાબ હોતા છે.

તાઝા ઓર બાસી મછલી કી પહચાન

સુવાલ : ક્યા તાઝા ઓર બાસી મછલી કી કોઈ પહચાન ભી છે ?

જવાબ : તાઝા મછલી રૌનક દાર ઓર ચમકદાર સી હોતી ઓર ઉસ કી આંખ કે ઢેલે ઉભરે હુએ હોતે હેં, મછલી કો હાથ કી ઉંગલી સે દબા કર દેખ લીજિયે કે નર્મ તો નહીં પડ ગઈ, તાઝા મછલી

﴿فَرَمَانَهُ مُرْتَضًى﴾: مَحَلِّي اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّوْ اَبِي رَسَلَمَ: मुज़ पर कसरत से दुरुद्वे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद्वे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्फिरत है. (राजि)

की सब से बड़ी पहचान येह है के उस के गलफ़्ते गहरे लाल रंग के होंगे मगर भोल कर गौर से देखना होगा क्यूंके मुजरिमाना जेहून के मछली फ़रोश धोका देने के लिये आज कल गलफ़्दों पर लाल रंग या भून लगा देते हैं. गलफ़्ते पीले हों, भाल बे रौनक सी हो गई हो, गोश्त नर्म पड गया हो, बढभू ज़ियादा हो और आंभें धंसी छुई हों तो समज लीजिये के मछली भासी है.

बतौरे तफ़रीह मछली का शिकार भेलना कैसा ?

सुवाल : मछली का शिकार भेलना कैसा है ?

जवाब : तफ़रीहन “शिकार भेलना” हराम और ज़रूरतन “शिकार करना” ज़ाईज है. ईमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा भान फ़रमाते हैं: “शिकार, के महुज़ शौकिया भ ग-रजे तफ़रीह हो, जैसे अक किस्म का “भेल” समजा जाता है. व लिहाज़ा “शिकार भेलना” कइते हैं. बन्दूक का हो प्वाह मछली का, रोज़ाना हो प्वाह गाह गाह (या’नी कभी कभी), मुत्लकन भ ईत्तिफ़ाक हराम है, उलाव वोह है जो भ गरज भाने या दवा या किसी और नफ़अ या किसी जरूर के दफ़अ को (या’नी नुकसान दूर करने के लिये) हो. आज कल के बडे बडे शिकारी जो ईतनी नाक वाले हैं के बाज़ार से अपनी भास ज़रूरत के भाने या पहनने की चीज़ लाने को जाना अपनी कसरे शान समजें या नर्म जैसे के दस कदम धूप में चल कर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: જો મુઝ પર એક દુરૂદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ઁજલ ઁસ કે લિયે એક કીરાત
અજ લિખતા હૈ ઁર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હૈ. (મુજીઁ)

મસ્જિદ મેં નમાઝ કે લિયે હાઝિર હોના મુસીબત જાનેં, વોહ ગર્મ દો પહર, ગર્મ લૂ મેં ગર્મ રૈત પર ચલના ઁર ઠહરના ઁર ગર્મ હવા કે થપેડે ખાના ગવારા કરતે ઁર દો દો પહર બલ્કે દો દો દિન શિકાર કે લિયે ઘરબાર છોડે પડે રહતે હૈં ! ક્યા યેહ ખાને કી ગરઝ સે જાતે હૈં ! હાશા વ કલ્લા ! (યા'ની હરગિઝ નહીં) બલ્કે વોહી લહૂવો લઈબ (યા'ની ખેલ તમાશા) હૈ ઁર બિલ ઈત્તિફાક હરામ. એક બડી પહયાન યેહ હૈ કે ઈન શિકારિયોં સે અગર કહિયે મ-સલન : “મછલી” બાઝાર મેં મિલેગી વહાં સે લે લીજિયે, હરગિઝ કબૂલ ન કર સકેંગે યા કહિયે કે અપને પાસ સે લા દેતે હૈં, કભી ન માનેંગે બલ્કે શિકાર કે બા'દ ખુદ ઁસ કે ખાને સે ભી ચન્દાં (યા'ની કુછ) ગરઝ નહીં રખતે, બાંટ દેતે હૈં, તો યેહ (શિકાર કે લિયે) જાના યકીનન વોહી તફરીહ વ હરામ હૈ.”

(ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 20, સ. 341)

સદરુશરીઅહ, બદરુતરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ફરમાતે હૈં : “શિકાર કરના એક મુબાહ (યા'ની જાઈઝ) ફે'લ હૈ મગર હરમ યા એહરામ મેં ખુશકી કા જાનવર શિકાર કરના હરામ હૈ,¹ ઈસી તરહ અગર શિકાર મહૂઝ લહૂવ (યા'ની ખેલ) કે તૌર પર હો તો વોહ મુબાહ (યા'ની જાઈઝ) નહીં.”

(બહારે શરીઅત, જિ. 3, સ. 680)

1 : મોહરિમ (યા'ની એહરામ વાલે) કે લિયે ઝરૂરતન મછલી કા શિકાર જાઈઝ હૈ.

ફરમાને मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने किताब में मुज़ पर दूइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये छिस्तिअकार करते रहेंगे. (उं: ५)

तफ़रीहन किये गये शिकार का ખाना कैसा ?

सुवाल : तो क्या तफ़रीहन शिकार भेलने वाले ने जो कुछ शिकार से हासिल किया उस का ખाना भी हलाल है ?

जवाब : जो मछली या हलाल जानवर शिकार किया उस का ખाना हलाल है सिर्फ़ उस का तफ़रीहन शिकार भेलने का इ'ल हलाल है, इस इ'ल से सख्खी तौबा करनी वाजिब है. मेरे आका आ'ला हजरत, एमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह एमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं : “रही शिकार की छुई मछली इस का खाना हर तरह हलाल है अगर्ये इ'ले शिकार उन (गुज़श्ता जवाब में मज़कूर) ना ज़रूरी सूरतों से हुवा हो.” (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 343)

मछली के शिकार के दर्दनाक मनाज़िर

बाभुल मदीना (कराची) में साहिले समुन्दर (नेटी जेटी) पर छुट्टी के दिन मछली के शिकार के बडे ही दर्दनाक मनाज़िर होते हैं, काफ़ी लोग डोर और कांटा ले कर सारा दिन शिकार भेलते रहते हैं. जिन्दा केंचवे के इडक्ते टुकडे कांटे में पिरोते हैं या जींगा नुमा अेक दरियाई कीडा कांटे में जिन्दा अटका कर ना ज़रूरी इ'ल के मुर-तकिब होते हैं. वहां अेक मप्सूस डिस्म की मछली पाई जाती है अगर वोह पानी से बाहर निकाली जाये तो गुबारे की तरह झूल जाती है अगर वोह कांटे में इंस जाये तो बेयारी को जिन्दा ही बुरी तरह खीर फ़ाड डालते हैं और जहालत की बिना पर उस को हलाल मछली कहते हैं हालांके हर मछली की तरह वोह भी हलाल है. अगर कोई केकडा इंस गया तो बेयारे की

करमाने मुस्तक: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर ओक बार दुइडे पाक पढा अदलाह उस पर दस रइमतें भेजता है. (स्)

शामत ही आ जाती है या तो पटप पटप कर मार देते हैं या भा'ज अवकात मेन रोड (Main Road) पर जिन्दा डेंक देते हैं ताके गाडियों तले कुयल जामे, येह जलनवरों की बिला वजह ईजा रसान्नी है. जलनवरों पर भी रइम करना सीभिये. याद रभिये ! जो रइम करता है, उस पर रइम किया जाता है और जो रइम नहीं करता, उस पर रइम नहीं किया जाता. “बुभारी शरीफ” में हजरते सय्यिदुना जरीर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के सय्यिदुल मुर-सलीन, रइमतुदिलल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद करमाया: “مَنْ لَا يُرْحَمُ لَا يُرْحَمُ” या'नी जो रइम नहीं करता, उस पर रइम नहीं किया जाता. (بُخَارِي ٤ ص ١٠٣ احديث ٦٠١٣) हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के सय्यिदुल मुबदिलगीन, जनाभे रइमतुदिलल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का करमाने रइमत निशान है: “रइम करने वालों पर रइमान غَزَّوَجَلَّ رइम करमाता है, (ईस लिये औ बन्दो !) जमीन वालों पर तुम रइम करो, तुम पर वोह रइम करमाओगा जिस की हुकूमत आस्मान पर है.” (ترمذی ج ٣ ص ٣٧١ احديث ١٩٣١)

क्या जल-परी का वुजूह है ?

सुवाल : “जल-परी” और जल-मानस या'नी दरियाई ईन्सान के क्या मा'ना हैं ? आया येह भयाली मज्लूक है या ईस का कोई वुजूह भी है ?

जवाब : जवाबन दारुल ईफता अहले सुन्नत के ओक मुफ्ती साहिब की तहकीक यन्द् अल्फाज के रदो बदल के साथ पेश की जाती है : “जल-परी” या'नी “पानी की परी.” और जल-मानस या'नी

इरमाने मुस्तक। حلى الله تعالى عليه و آله وسلم: श्री शम्भू मुञ्ज पर दुइडे पाक पढना (मूल गया वोड जन्त का रास्ता (मूल गया. (طرائق)

दरियाई ईन्सान महुज अइसा-नवी किरदार हैं ता डाल ईन का कोई साईन्सी सुभूत मन्जरे आम पर नहीं आया, अलबत्ता हैवानियात पर लिप्पी कदीम कुतुब में ईस तरड की मछलियों का जिक्र मिलता है के जिन की शकल या भा'ज आ'जा ईन्सानों से किसी डद तक मिलते जुलते हैं.

येह रिशाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शाही गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी कूलों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट तक्सीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों की ब निथते सवाब तोडके में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाईल रखने का मा'मूल बनाईये, अप्भार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने मडले के घर घर में माडाना कम अज कम अेक अदद सुन्तों भरा रिशाला या म-दनी कूलों का पेम्फ्लेट पछाँचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाईये और ખૂબ सवाब कमाईये.

गमे मदीना, बकीअ, मकिरत और बे हिसाब जन्तुल किरदौस में आका के पडोस का ताविब



2 जुमादल आभिरी 1435 सि.ह.
03-04-2014

माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	المواہب	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن مجید
مرکز اہلسنت برکات رضا الہند	مدارج النبوۃ	دارالفکر بیروت	درمنثور
دارالکتب العلمیہ بیروت	کشف الخفاء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	خزائن العرفان
دارالکتب العلمیہ بیروت	حیۃ النبیان	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
مکتبۃ اسامین زید صاحب	المغرب	دارالانوار بیروت	مسلم
دارالکتب العلمیہ بیروت	مدققتہ القلوب	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
کوئٹہ	الہجوہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	نسائی
دار احیاء التراث العربی بیروت	ہدایہ	دارالفکر بیروت	ترمذی
دار احیاء التراث العربی بیروت	بدائع الصنائع	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
دار المعرفہ بیروت	درمختار رد المحتار	دار احیاء التراث العربی بیروت	مجموع کبیر
دارالفکر بیروت	عائشہ سیرت	دار الوفا	شرح بیچ مسلم
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دارالفکر بیروت	مرقاۃ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مرآۃ المناجیح
فرید کتب اسٹال مرکز الاولیاء لاہور	عجائب النبیان	دارالکتب العلمیہ بیروت	صفیۃ الصفوۃ
☆☆☆☆	☆☆☆☆	دارالکتب العلمیہ بیروت	الاصابہ

करमाने मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइइए पाक न पढा तलकीक
वोडु अद अप्त हो गया. (उरुः)

इंडरिस

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
दुइइ शरीक की इजीलत	1	समुन्दरी अज्ञात बात अनगिनत हैं	12
यन्द अनोषी मछलियां	1	दो मछलियों के मु-तअल्लिक आ'ला	
रअ'आदा (बर्क मछली)	2	उज्जरत की तलकीके अनीक	13
कलिमा लिषी हुँ मछली	2	डिकायत	14
काई देर तक जिन्दा रहने वाली मछलियां	2	जिर्सी के मु-तअल्लिक मुप्तलिइ	
जिन्दा जजीरा !	3	अकवाल	14
जामोर	4	नर और मादा मछली में यन्द नुमायां इर्क	15
वैल मछली	4	बिगैर गलइडे की मछली जाना कैसा ?	16
मनारा	5	मछली की कौन सी डिस्म डराम है ?	16
कूकी	5	मछली के डलाल डोने की दीगर सूरतें	16
कातूस	6	परिन्दे की योंय से मछली छूट कर गिरी...	17
दुड्डीन (सोस मछली)	6	मछली के पेट से अगर मछली निकले तो ?	17
परों वाली मछली	7	मछली के अन्दे	18
मिन्शार	7	पानी में केमीकल के जरीअे मछलियां	
कौसज	8	भारना कैसा ?	19
गाइल मछली डी जाल में इंसती है	8	केमीकल से मारी हुँ मछलियां जाना कैसा ?	19
म-दनी मुन्नी और गाइल मछलियां	9	अम धमाके से मछलियां भारना कैसा ?	19
गाइल मछलियां जाना कैसा ?	10	जाल में गैर मूजी जानवर इंस जअें तो ?	20
कौन कौन सा आषी जानवर डलाल है ?	10	मछली की डडियां जा सकते हैं या नही ?	21
मछली की ता'रीक	10	मछली की जाल जाना कैसा ?	22
मछली के सिवा डर आषी जानवर डराम है	11	मछली पकाने का तरीका	22
मछली की डजारों डिस्में हैं	12	सरकारे मदीना वस्लम ने मछली जाई	23

ફરમાને મુસ્તફા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ الْوَسْمُ : जिस ने मुझ पर एक बार दूड़के पाक पढा अदलाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

કદ-આવર મછલી	23	મછલી કે સર કી યખ્ની કઈ અમરાઝ	
એક ઈશકાલ ઓર ઉસ કા જવાબ	25	કે લિયે મુફીદ હૈ	41
હાલતે ઈઝતિરાર ક્યા હૈ ?	27	મછલી ઓર કુવ્વતે હાફિઝા	42
અમીનુલ ઉમ્મહ	27	કેકડા હલાલ હૈ યા હરામ ?	43
દિલ કા મરીઝ ઠીક હો ગયા	29	ઝીંગા ખાના કેસા ?	44
સમુન્દર કી ફેંકી હુઈ મછલી ખાના કેસા ?	30	આ'લા હઝરત ને કભી ઝીંગા ન ખાયા	45
ક્યા ઝમીન મછલી કી પીઠ પર હૈ ?	32	ઝીંગા ખાને સે કોલેસ્ટ્રોલ મેં ઈઝાફા હોતા હૈ	45
સબ સે પહલે નૂરે મુસ્તફા પૈદા હુવા		ઝીંગા બિગૈર સફાઈ કિયે ખાના	46
યા કલમ ?	33	છોટી મછલિયાં બિગૈર આલાઈશ	
કલમ કે બારે મેં વઝાહત	34	નિકાલે ખાના	46
જન્નત કી સબ સે પહલી ગિઝા	35	મછલી કે ઝબ્હ ન કરને કી હિક્મત	47
મછલી બોલ નહીં સકતી ઈસ કી		મછલી કા ખૂન પાક હૈ યા નાપાક ?	47
અજ્જબો ગરીબ હિક્મત	36	મછલી કા હર જુઝ પાક હૈ	47
મછલી કે તિબ્બી ફવાઈદ	37	સૂખી મછલી ખાના કેસા ?	47
કૌન સી મછલી ઝિયાદા મુફીદ હૈ ?	37	બાસી મછલી ખાના કેસા ?	48
ક્યા મછલી બિહ્કુલ ન ખાના મુઝિરૈ		તાઝા ઓર બાસી મછલી કી પહચાન	48
સિહ્હત હૈ ?	37	બતૌરે તફરીહ મછલી કા શિકાર	
હફ્તે મેં દો બાર તો મછલી ખા હી		ખેલના કેસા ?	49
લેની ચાહિયે	38	તફરીહન કિયે ગએ શિકાર કા ખાના કેસા ?	51
મછલી કે તેલ કે ફવાઈદ	39	મછલી કે શિકાર કે દર્દનાક મનાઝિર	51
મછલી કે સર કે ફવાઈદ	40	ક્યા જલ-પરી કા વુજૂદ હૈ ?	52
મછલી કે સર કી યખ્ની બનાને કા તરીકા	41	મઆખિઝો મરાજેઅ	53

ताजा और नासी मछली की पहचान

आंभ

गलूङ्गे

जिस्म बाल

ताजा



- आंभें ठोसरी बुई
- पुतलियां सियाह और चमकदार
- आंभ की सामने की तिलवी लकड़क
- रंग गहरा बाल
- जिह्व साफ और चमकदार
- जिस्म सफा और न टपने वाला

नासी



- आंभें धंसी बुई
- पुतलियां जई और भाकी
- आंभ की तिलवी दूधिया सदे और जई
- रंग का भरम हो कर पीला पड जना
- भटभू जियादा आना
- जिह्व भे रीनक
- जिस्म गिलुबु नर्म और टपने वाला



मक-त-जलुल मदीना®

दा'वते ईस्लामी

इंजामे मदीना, श्री डोलिया जगीचे डे सामने, मिर्जापूर, राहमदशाबाद, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net